पतञ्जलि विश्वविद्यालय, (हरिद्वार)

पाठ्यक्रम - B.A. दर्शन

वर्ष- 2024-2025

पाठ्यक्रम - B.A. - दर्शन प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के कुछ सामान्य नियम एवं प्रस्तावना

- परीक्षा में 45% अंक प्राप्त करने वाले छात्र को ही उत्तीर्ण माना जायेगा।
- प्रस्तुत पाठ्यक्रम तीन वर्ष का होगा।
- प्रत्येक वर्ष 2 सत्र (Semester) में, 2 बार परीक्षाएं होंगी।
- प्रत्येक परीक्षा में छः प्रश्नपत्र होंगे।
- सभी प्रश्न-पत्र 100-100 अंक के होंगे।
- प्रत्येक प्रश्न-पत्र में 25 अंकों की आन्तरिक परीक्षा एवं 75 अंकों की बाह्य परीक्षा होगी।
- प्रत्येक परीक्षा का निर्धारित समय 3 घण्टे होगा।

पतंजलि विश्वविद्यालय
UNIVERSITY OF PATANJALI
Patanjali Yog Peeth, Roorkee – Haridwar Road, Haridwar, Uttarakhand 249405

Faculty of Humanities and Ancient Studies

Department of Philosophy

Session 2024-25

BA Darshan

(According to NEP-2020, as per UGC Guidelines dated 07-12-2022)

Semester I

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit L	Credit T	Credit P	Credit Total Credits
1	Discipline Specific Major	BDPHMJ-101	*योगदर्शनम्*	5	1	0	6
2	Discipline Specific Minor	BDPHMN-102	वैदिकेत्तर दर्शन परिचयात्मक	3	1	0	4
3	Inter Disciplinary	BDPHID-103(1)	भारतीय संविधान	3	1	0	4
		BDPHID-103(2)	प्राचीन भारत का *इतिहास* (प्रारम्भ से मौर्यकाल तक)				
		BDPHID-103(3)	समाजशास्त्र का परिचय				
		BDPHID-103(4)	संस्कृतसाहित्यम् - I				
4	Ability Enhancement	BDPHAE-104	Communicative English	1	0	2	2
5	Skill Enhancement/ Internship	BDPHSE-105(1)	Basic Knowledge of Vocal & Instrumental	1	1	2	3
		BDPHSE-105(2)	Sanskrit with Technology				
		BDPHSE-105(3)	*योग चिकित्सा* – I				
6	Value Added	BDPHVA-106(1)	भारतीय संस्कृति बोध – I	2	1	0	3
		BDPHVA-106(2)	पर्यावरणविज्ञानम्	2	1	0	
					Total Credits		22

Semester II

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit L	Credit T	Credit P	Credit Total Credits
1	Discipline Specific Major	BDPHMJ-201	*न्यायदर्शनम्* (प्रथम एवं द्वितीय अध्याय)	5	1	0	6
2	Discipline Specific Minor	BDPHMN-202	वैदिकेत्तर दर्शन (विवरणात्मक)	3	1	0	4
3	Inter Disciplinary	BDPHID-203(1)	प्राचीन भारत का *इतिहास*	3	1	0	4
		BDPHID-203(2)	भारतीय*समाज*				
		BDPHID-203(3)	भारत का स्वतन्त्रता संग्राम एवं स्वातंत्र्योत्तर भारत				
		BDPHID-203(4)	संस्कृतसाहित्यम् - II				
4	Ability Enhancement	BDPHAE-204	Advanced Communicative English	1	0	2	2
5	Skill Enhancement/ Internship	BDPHSE-205(1)	*योग चिकित्सा* - II	1	1	2	3
		BDPHSE-205(2)	Intermediate Knowledge of Vocal & Instrumental	1	1	2	
		BDPHSE-205(3)	*गोविज्ञानम्*	1	1	2	
6	Value Added	BDPHVA-206(1)	भारतीय संस्कृति बोध – II	2	1	0	3
		BDPHVA-206(2)	*योगविज्ञानम् (प्रयोगात्मकम्)*	1	0	4	

	Total Credits	22
For those student(s) who want to carry the course for Second year		44
Those student(s) want to exit in Ist year they need to complete Summer Training of credit		4
Grand Total		48
* 4 credit over and above of 44 credit to be awarded to those students who want to exit to the course after completing summer training		

Semester III

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BDPHMJ-301	न्यायदर्शनम् (तृतीय अध्याय)	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major-2	BDPHMJ-302	न्यायदर्शनम् (चतुर्थ एवं पंचम अध्याय)	5	1	0	6
3	Discipline Specific Minor	BDPHMN-303	भाषाविज्ञानं मनोविज्ञानं च	3	1	0	4
4	Inter Disciplinary	BDPHID-304(1)	स्वर्णकाल का इतिहास	1	1	0	2
5		BDPHID-304(2)	समाजशास्त्रीय सिद्धान्त				
6		BDPHID-304(3)	संस्कृतसाहित्यम् - III				
7	Ability Enhancement	BDPHAE-305	सरल-मानक-संस्कृतम्	1	0	2	2
8	Skill Enhancement/ Internship	BDPHSE-306(1)	सस्वर वेदपाठ	1	0	4	3
9		BDPHSE-306(2)	Advance knowledge of Vocal & Instrumental				
		BDPHSE-306(3)	यज्ञविज्ञानम्				
						Total Credits	22

Semester –IV

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BDPHMJ-401	वैशेषिक दर्शन पूर्वार्ध	5	1	0	6
2	Discipline Specific Major-2	BDPHMJ-402	साङ्ख्यदर्शनम् पूर्वार्ध	5	1	0	6
3	Discipline Specific Major-3	BDPHMJ-403	साङ्ख्यदर्शनम् उत्तरार्ध	3	1	0	4
4	Discipline Specific Minor-1	BDPHMN-404	संस्कृतव्याकरण	3	1	0	4
5	Ability Enhancement	BDPHAE-405(1)	Communication Technology	1	0	2	2
		BDPHAE-405(2)	Introduction to journalism and mass communication	1	0	2	
						Total Credits	**22**
						For those students who want to carry the course for Third year	**88**
						Those students want to exit in 2nd year they need to complete summer training of credit	**4**
						Grand Total	**92**
***4 credit over and above of 92 credit to be awarded to those students who want to exit to the course after completing summer training**							

Semester -V

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BDPHMJ-501	वेदान्त दर्शन पूर्वार्ध	5	1	0	6
2	Discipline Specific Major-2	BDPHMJ-502	वेदान्त दर्शन उत्तरार्ध	3	1	0	4
3	Discipline Specific Major-3	BDPHMJ-503	तर्कसंग्रह एवं वैशेषिक दर्शन उत्तरार्ध	3	1	0	4
4	Discipline Specific Minor	BDPHMN-504	वैदिक साहित्य - I	3	1	2	4
5	Internship	BDPHSE-505	योग आयुर्वेद प्राकृतिक चिकित्सा प्रशिक्षण	0	0	8	4
						Total Credits	**22**

Semester - VI

S.No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major-1	BDPHMJ-601	मीमांसा ज्योतिष्यपरिचयञ्च	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major-2	BDPHMJ-602	भारतीय दर्शनों की मीमांसा एवं इतिहास	3	1	0	4
3	Discipline Specific Major-3	BDPHMJ-603	सांख्यकारिका	5	1	0	6
4	Discipline Specific Minor-1	BDPHMN-604	बुद्धचरितम्	3	1	0	4
5	Discipline Specific Minor-2	BDPHMN-605	लघु शोध प्रबन्ध एवं वैदिक साहित्य - II	3	1	0	4
						Total Credits	**22**
			For those students who want to carry the course for Forth year				**132**

विषय विशेषज्ञ	विषय विशेषज्ञा	विभागाध्यक्षा
प्रो. श्रीनिवास वरखेडी	प्रो. शिवानी वी.	प्रो. साध्वी देवप्रिया
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बेंगलुरू	दर्शन विभाग पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम- B.A.- दर्शन प्रथमवर्ष

Semester-I

BDPHMJ-101 - योगदर्शनम्

क्रेडिट:-06
घण्टें:-90

उद्देश्य:-

- योग एवं योग से सम्बन्धित भाष्य वार्तिक टीकाओं से परिचय करवाना।
- पातञ्जल योगसूत्र के चारों पादों के सूत्रार्थ एवं भावार्थ से अवगत कराना।
- योग सूत्रों को कण्ठस्थ कराना।

पातञ्जल योगसूत्र

इकाई प्रथम- दर्शन साहित्य का परिचय (15 घण्टे)

इकाई द्वितीय- समाधिपाद सूत्रार्थ एवं भावार्थ (20 घण्टे)

इकाई तृतीय- साधनपाद सूत्रार्थ एवं भावार्थ (20 घण्टे)

इकाई तृतीय- विभूतिपाद सूत्रार्थ एवं भावार्थ (20 घण्टे)

इकाई पञ्चम- कैवल्यपाद सूत्रार्थ एवं भावार्थ (15 घण्टे)

परिणाम:-

- योग एवं योग से सम्बन्धित भाष्य, वार्तिक एवं टीकाओं का विशेष ज्ञान होगा।
- योगदर्शन के चारों पादों के सूत्रार्थ एवं भावार्थ की स्पष्ट जानकारी प्राप्त होगी।
- योगसूत्र शुद्ध उच्चारणपूर्वक कण्ठस्थ होगा।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- योगदर्शन- स्वामी योगर्षि रामदेव, दिव्य प्रकाशन, हरिद्वार।
पातञ्जलयोगदर्शनम् - डॉ. आचार्या साध्वी देवप्रिया, दिव्य प्रकाशन, हरिद्वार।
पातञ्जलयोगदर्शनम् - हरिहरानन्द आरण्य, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

प्रश्नपत्र (2)

क्रेडिटः-04

घण्टें:-60

BDPHMN-102 - वैदिकेतर दर्शन परिचयात्मक

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- दर्शन सम्प्रदायों के संग्रहकर्त्ता माधवाचार्य का जीवन अवबोध कराना।
- चार्वाक दर्शन के मूल सिद्धान्तों व विचारों के प्रति सहज बोध करवाना।
- जैन दर्शन के दार्शनिक सिद्धान्तों से छात्रों का परिचय कराना।
- बौद्ध दर्शन की मूल मान्यताओं, सम्प्रदायों व उपदेशों से परिचित कराना।

प्रथम इकाईः-वैदिक एवं वैदीकेतर दर्शन की अवधारणाओं एवं सिद्धान्तों का परिचय। (10 घण्टें)

द्वितीय इकाईः- चार्वाक दर्शन का परिचय, (प्रमाण मीमांसा, तत्व मीमांसा एवं नीति मीमांसा) (10 घण्टें)

तृतीय इकाईः- जैन दर्शन का परिचय, तीर्थंकर परम्परा, त्रिरत्न, बंधन और कैवल्य, दिगंबर और श्वेतांबर मत। (20 घण्टें)

चतुर्थ इकाईः- बौद्ध दर्शन, महात्मा बुद्ध का जीवन परिचय, चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, निर्वाण की अवधारणा, हीनयान और महायान मत। (20 घण्टें)

परिणाम- 1. वैदिकेतर दर्शन से विद्यार्थियों का परिचय होगा।

2. वैदिक और वैदिकेतर दर्शन का तुलनात्मक विश्लेषण करने का अवसर प्राप्त होगा।

3. दर्शन शास्त्र के विभिन्न पक्षों को समग्र रूप से समझने में सहायता मिलेगी।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सर्वदर्शन संग्रह, प्रो. उमाशंकर शर्मा (ऋषि)

प्रकाशक-चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

BDPHID-103(1)- भारतीय संविधान

उद्देश्य:

यह पाठ्यक्रम इस बात का परिचय देता है कि भारत के संविधान निर्माण प्रक्रिया कैसी रही। संविधान के मूल तत्व का ज्ञान प्राप्त करेंगें। छात्र सरकार के विभिन्न अंगों की प्रकृति को समझना सीखेंगे। छात्र भारत में संघवाद की अवधारणा के बारे में जानेंगे। छात्र भारत में विकेन्द्रीकरण की प्रवृत्ति के बारे में जानेंगे।

इकाई प्रथम- संविधान सभा और संविधान (15 घण्टे)

इकाई द्वितीय- सरकार के अंग (16 घण्टे)

इकाई तृतीय- संघवाद (14 घण्टे)

इकाई चतुर्थ- विकेन्द्रीकरण (15 घण्टे)

परिणाम:
छात्र इसमें सक्षम होगा
1. भारतीय संविधान के मूल तत्वों की व्याख्या करने में।
2. भारतीय संविधान के द्वारा भारतीयों के जीवन स्तर में सुधारों की व्याख्या करने में।
3. सरकार के विभिन्न अंगों का वर्णन करने में।
4. भावी पीढ़ियों को भारतीय संविधान के महत्व को अपनाने के लिए प्रेरित करने में।
5. वर्तमान राजनीतिक संकट से छुटकारा पाने के लिए संवैधानिक प्रावधानों को लागू करने की प्रवृत्तियों को समझने में।

पाठ्य पुस्तकें:-

1. जी. ऑस्टिन, (2010) 'द इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन: कॉर्नरस्टोन ऑफ ए नेशन', नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 15वां प्रिन्ट।

2. आर. भार्गव 'भारतीय संविधान की राजनीति और नैतिकता', नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

3. डी.डी बसु, (2012) 'भारत के संविधान का परिचय', नई दिल्ली, लेक्सिस नेक्सिस।

देवप्रिया

BDPHID-103(2)- प्राचीन भारत का इतिहास (प्रारम्भ से मौर्यकाल तक)

क्रेडिटः-04
घण्टेंः-60

उद्‌देश्यः-

यह पाठ्यक्रम भारत में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास से परिचित कराने के लिए निर्मित किया गया है। इसका उद्देश्य छात्रों को भारतीय इतिहास में परिवर्तन और निरंतरता के तत्वों से परिचित कराना है। छात्रों को सैंधव सभ्यता के युग से लेकर मौर्य युग तक भारतीय और राजनीति में प्रारंभिक सभ्यता के क्रमिक विकास से परिचित कराता है। पहली इकाई में भारतीय इतिहास के जानने के स्रोतों के सामान्य विवरण से शुरुआत करते हुए, अगली दो इकाइयों में सैंधव और वैदिक संस्कृति के उद्भव का वर्णन किया गया है और चतुर्थ इकाई में उपनिषदों में वर्णित धर्म और शिक्षाओं का वर्णन है और पांचवी इकाई में मगध साम्राज्य के राजनीतिक विकास का वर्णन किया गया है।

इकाई प्रथम- भारतीय इतिहास को जानने के स्रोत (13 घण्टे)

इकाई द्वितीय- सैन्धव सभ्यता उत्पत्ति एवं विकास (13 घण्टे)

इकाई तृतीय- सैन्धव सभ्यता में धार्मिक परम्पराएं (14 घण्टे)

इकाई चतुर्थ- उपनिषदीय धर्म एवं विभिन्न शिक्षाएं (10 घण्टे)

इकाई पञ्चम- छठीं शताब्दी ई.पू. भारत की राजनीतिक स्थिति (10 घण्टे)

परिणामः-

1. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों का समुचित विश्लेषण करने में।

2. भारत के सैंधव और वैदिक काल के इतिहास की वास्तविक समझ विकसित करने में।

3. प्राचीन भारत में धर्म और संस्कृति के रूप में उपनिषदों के ज्ञान व उनकी शिक्षाओं के विषय में।

4. वे मगध साम्राज्य को अन्य सोलह जनपदों से कैसे अलग किया जाए, इस पर विचारों का आदान–प्रदान करेंगे।

5. अशोक के जीवन और उनके धम्म को अपने जीवन में आत्मसात करें।

निर्धारित पाठ्य पुस्तक- शर्मा, एल0 पी0: प्राचीन भारत, लक्ष्मी नरायण अग्रवाल, आगरा, 2022 स सिंह, उपेन्द्रः प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास पाषाण काल से 12 वीं शताब्दि ई. Delhi 2016.

BDPHID-103(3) -सामाजशास्त्र का परिचय

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

उद्देश्य:-

यह पाठ्यक्रम इस बात का परिचय देता है कि समाजशास्त्र की मूल अवधारणा क्या है। विद्यार्थी सामाजिक अवधारणाओं की पृष्ठभूमि और उनकी विशेषताओं के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगें। संस्कृति क्या है, संस्कृति के विभिन्न आयामों की प्रकृति को समझना सीखेंगे। छात्र संस्कृति और सभ्यता के अन्तर को जानेंगें। विद्यार्थी सामाजिक संरचना की अवधारणा के बारे में जानेंगे। सामाजिक स्तरीकरण एवं गतिशीलता की विस्तृत विवेचना को समझेंगें।

इकाई प्रथम- समाज शास्त्र परिचय (14 घण्टें)

इकाई द्वितीय- सामाजिक अवधारणाएँ (13 घण्टें)

इकाई तृतीय- संस्कृति एवं सभ्यता विश्लेषण (11 घण्टें)

इकाई चतुर्थ- सामाजिक संरचना (12 घण्टें)

इकाई पञ्चम- समाजिक स्तरीकरण एवं गतिशीलता (10 घण्टें)

परिणाम:

1. समाजशास्त्र की विषयवस्तु की व्याख्या करने में।
2. सामाजिक अवधारणाओं का ज्ञान प्राप्त कर सामाजिक सुधारों की व्याख्या करने में।
3. संस्कृति की मूल अवधारणाओं का अध्ययन कर भावी पीढ़ी को प्रेषित करने में।
4. भावी पीढ़ियों को सामाजिक संरचना के अनुरूप जीवन पद्धति अपनाने के लिए प्रेरित करने में।
5. सामाजिक गतिशीलता के माध्यम से समाज सुधार करने की प्रवृत्तियों को समझने में।

पाठ्य पुस्तक- गुप्ता, एम. एल. एवं शर्मा, डी. डी., भारत में समाज, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2022

BDPHID-103(4) संस्कृतसाहित्यम् - I

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

1. संस्कृत व्याकरण का आधारभूत ज्ञान प्रदान कराना।
2. वर्णोच्चारण शिक्षा का बोध कराना।
3. संज्ञाओं का ज्ञान कराना।
4. सन्धि प्रकरण से परिचित कराना।

प्रथम इकाई- शिक्षाप्रकरणम् - (15 घण्टे)

अकुह विसर्जनीया: कण्ठ्या:, इचुयशास्तालव्या:, ऋटुरषा मूर्धन्या:, लतुलसा दन्त्या:, एदैतो कण्ठ्यतालव्यौ, ओदौतौ कण्ठय्औष्टयो इत्यादय:।

अभ्यान्तर प्रयत्न, बाह्यप्रयत्न, स्पृष्टकरणा स्पर्शा:, ईषद्स्पृष्टकरणा अन्तस्था:, ईषद् विवृतकरणा ऊष्माण: इत्यादय: ।

द्वितीय इकाई- संज्ञाप्रकरणम् - (15 घण्टे)

वद्धिरादैच्, अदेङ्गुण:, हलोऽनन्तरा: संयोग:, मुखनासिकावचनोऽनुनासिक:,अचोऽन्त्यादि टि, अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा, शि सर्वनामस्थानम्, सुडनपुंसकस्य, ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् इत्यादय: ।

तृतीय इकाई- संहिताप्रकरणम्, (15 घण्टे)

इको यणचि, एचोऽयवायाव:, आद्गुण:, अक: सवर्णे दीर्घ:, वान्तो यि प्रत्यये इत्यादय:।

अच् सन्धि - अमि पूर्व:, एङि पररूपम्, ऋत् उत्, ङसिङसोश्च, इत्यादय:।

हल् सन्धि - खरि च,ष्टुनाष्टु:, स्तो:श्चुना श्चु:, हलो यमां यमि लोप:, झरो झरि सवर्णे, अनुस्वारस्य ययि परसवर्ण: इत्यादय:।

चतुर्थ इकाई- रघुवंश महाकाव्यम् - प्रथम: सर्ग: । (15 घण्टे)

परिणाम-

1. संस्कृत व्याकरण के आधारभूत ज्ञान से शब्दों की वैज्ञानिक पद्धति से परिचित हो जाता है।
2. वर्णोच्चारण शिक्षा के बोध से वर्णों एवं शब्दों के शुद्धतापूर्वक उच्चारण व उत्कृष्ट संस्कृत संभाषण करने व कराने में समर्थ हो जाता है।
3. संज्ञाओं के ज्ञान से उसके पहचान करने व कराने में समर्थ हो जाता है।
4. सन्धियों के परिचय से सन्धि विच्छेद व शब्दार्थ बोध करने व कराने में सक्षम हो जाता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-

रघुवंश महाकाव्यम् - प्रकाशक- चौखम्भा ओरियन्टालिया, दिल्ली - 11007, (भारत)।

व्याकरण चन्द्रोदय 1-डॉ. आचार्या साध्वी देवप्रिया, प्रकाशक-दिव्यप्रकाशन।

सहायक ग्रन्थ- वर्णोच्चारण शिक्षा सूत्राणि, प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी।

प्रकाशक- विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी-221001

BDPHAE-104 COMMUNICATIVE ENGLISH

Credit:-02
Hours:-30

Course Objectives:

- Develop proficiency in speaking, listening, reading, and writing in English for effective communication.
- Build confidence in students to use English in various social and professional contexts.
- Help students speak fluently and coherently in both formal and informal settings.
- Strengthen vocabulary, grammar, and pronunciation to enable students to express themselves accurately and appropriately.
- Develop active listening skills for better comprehension in conversations, lectures, and presentations.
- Improve students' ability to understand, analyze, and interpret written texts, enhancing critical thinking.

Unit 1: Fundamentals of English Grammar and Vocabulary Building — 6 Hours

Topics	Prescribed Texts
• Sentence Formation • Parts of Speech • Articles • Modals • Direct and Indirect speech	English Grammar in Use by Raymond Murphy, 4th Edition, Cambridge
• Synonyms, Antonyms, Homophones and Homonyms	Word Power Made Easy by Norman Lewis

Unit-2: Reading Skills — 6 Hours

Topics	Prescribed Texts
• Reading Comprehension (Skimming and Scanning) • Reading Academic Texts • Identifying the main idea of the text	Swami Vivekananda's Speech Of 1893, Chicago Short Story: Premchand, 'The Holy Panchayat'

Unit-3: Listening Skills — 6 Hours

Topics	Prescribed Texts
• Types of listening, Listening vs Hearing • Listening for details and main ideas • Note- taking skills	Swami Vivekananda's Speech Of 1893, Chicago

Unit-4: Speaking Skills — 6 Hours

Topics	Prescribed Texts
• Pronunciation (Stress, intonation, rhythm)	*Fundamentals of linguistics* by Raj Kumar Sharma, Atlantic Publishers, 2024.pp. 80-82
• Conversation and dialogue practice • Extempore • Public speaking and presentation skills • Debate and Group discussion	

Unit-5: Writing Skills	6 Hours
Topics	**Prescribed Texts**
• Sentence formation and paragraph writing • Structuring Essays • Writing formal and informal letters • Article writing • Email writing	*Language and Communication Skills*, Cambridge University Press, 2019

Suggested

Course Specific Outcomes

By the end of the course, students should be able to:

- Confidently engage in various conversations in English, demonstrating clarity and fluency.
- Effectively listen to and understand spoken English in different accents and contexts.
- Write clearly and correctly in English for various purposes such as emails, letters and essays.
- Understand and critically analyze different types of written texts (articles, essays, literature, etc.).
- Contribute thoughtfully in group discussions, presentations, and debates.
- Deliver effective oral presentations with confidence, clarity, and the appropriate use of language.

Method of Teaching & Assessment- Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercises

Readings:

- Adair, John. *Effective communication*. 4th Edition, Pan Mac Millan, 2009.
- Dawes, L. *The Essential Speaking and Listening*. Routledge, 2008.
- McCarthy, Micheal, Felicity O'Dell. *Basic Vocabulary in Use.* Cambridge. 2nd Edition, 2010.
- Singh, R.P. *An Anthology of English Essays*. Oxford, 2000.
- Seely, John. *The Oxford Guide to Writing and Speaking*. Oxford University Press, 1998.
- Sharma, Raj Kumar, Bhushan Singh. A Comprehensive English Grammar. Atlantic Publishers, 2019.

BDPHSE-105(1) Credit:-03

Basics Knowledge of Vocal & Instrumental Hours:-45

Objective-

- Understand the fundamental concepts of music, including its origins, methods, types, and forms
- Explore the nature of sound, its origin, and the elements of music such as notes, pitches, and rhythm. Learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics. Gain knowledge of basic musical notes, scales, and octaves.Practice to Sing five Bhajans.
- Understand the concept of Raag, its rules, classifications, and basic characteristics. Identify the ten Thaats and learn about their significance in Raag classification. Recognize three Raags belonging to each of the ten Thaats.
- Study the lives and contributions of prominent musicians.

UNIT- I Basic Knowledge & Definition of Music, Its Origin, Its Methods, Brief about Uttar bhartiya & Carnatic Music , Margi /Desi Sangeet. **12 Hours**

UNIT- II Sound, Origin of Sound, Nada, Types of Nada (Aahat/Anahat), Shruti, Swar, Types of Swar, Andolan, Knowledge of 7 Basic Notes & 5 vikrit Notes, Saptak,Types of Saptak.
Bhatkhande Swarlipi padhhati, **Definitions**: Alankar, Matra, Sama, Laya, sthai, Antra, **Kulgeet of UOP**,
5 Alankars (According to Bhatkhande kramik Pustak Malika-1),
Relation between Music & Yog, Basic Knowledge of Music Therapy & Its Benefits. Basic Music Related Five shlokas from the Book Raag & Taal Parichay Bhaag –All Parts, Basic Introduction of **"TeenTal"**, Labeled Diagram of Harmonium, Labeled Diagram of Tabla, An Elementry introduction of types of instruments- Tatta , Sushir, Avanaddha, Ghana. **12 Hours**

UNIT- III Practice of "AUM" in Kharaj, Breathing Exercise to improve Voice Range and Vocal exercise of 5 Alankars (According to Bhatkhande kramik Pustak Malika-1), Practice of Twelve Swars in Saptak,Practice of Two Bhajan,One Patriotic Song,Kulgeet, Five Swastivachan Mantra, Practice of Musical Meditation in Primary stage for Concentration. **12 Hours**

UNIT- Iv **Harmonium:-** Playing Skills of Yagya Prarthna, One Bhajan.
Tabla:- Elementry Practice of Some Tabla Bols(Na Ti Teen, Dha Dhi Dheen), Musical Chart Paper/Model. **9 Hours**

Outcomes:-

- Students will know what music is, where it comes from, and the different types it can have.
- Students will understand how sound works and learn about notes, pitches, and how they change in music.They will learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics.Students will acquire knowledge of basic musical notes, scales, and octaves, and practice singing five Bhajans.
- Students will learn about Raag, its rules, and different types, helping them appreciate Indian classical music better.

Students will discover the lives of famous musician and understand their importance in music history.

BDPHSE-105(2) -Sanskrit with Technology

Credit:-03
Hours:-45

Objectives:

- Introduce students to the basic concepts of computers and the fundamental tasks of the computers.
- Provide students with knowledge of computer networks, the internet, and how to use web browsers and electronic mail effectively for academic and personal purposes.
- Enable students to use word processing, spreadsheet, and presentation software effectively.
- Introduce students to online tools for Sanskrit learning and practice, including typing, transliteration, and other Sanskrit-specific applications.

Unit 1 Computer Fundamentals (8 hours)

What is Computer, Basic Applications of Computer; Components of Computer System, Computer Memory, Concepts of Hardware and Software; What is an Operating System; Basics of Popular Operating Systems; The User Interface, Folders and Directories, Creating and Renaming of files and folders, Opening and closing of different Windows.

Unit 2 Introduction to Internet, WWW and Web Browsers (7 hours)

Basic of Computer networks; LAN, WAN; Concept of Internet; Applications of Internet; connecting to internet; World Wide Web; Web Browsing software, Basics of electronic mail

Unit 3 Understanding Word Processing/MS Office (12 hours)

Word Processing Basics; Opening and Closing of documents; Formatting of text; Table handling; Spell check,

Using Spread Sheet: Basics of Spreadsheet; Manipulation of cells; Formulas and Functions; Editing of Spread Sheet,

Making Small Presentation: Basics of presentation software; Creating Presentation; separation and Presentation of Slides; Slide Show; Taking printouts of presentation / handouts.

Unit 4 Online Sanskrit Tools (6 hours)

Samsâdhanî, Sambhâcâ, Sanskrit Heritage, Tools by IIT Kharagpur

Unit 5 Practical Sanskrit (12 hours)

Sanskrit Typing and Transliteration (Roman Diacritics)

Outcomes:

- After successfully completing the course, Students will be able to
- 1.Identify the components of a computer system and effectively manage files and folders within an operating system.
- 2.Demonstrate the ability to connect to the internet, browse the World Wide Web using web browsers, and use email systems efficiently for communication and information gathering.

- 3.Create and format the documents in Word, work with spreadsheets in Excel, and prepare presentations using PowerPoint, including the use of basic functions and formulas.
- 4.Develop proficiency in typing Sanskrit, using Roman Diacritics for transliteration, and applying online Sanskrit tools for enhanced language learning and practice.

References:

- Fundamentals of Computers by Rajaraman V
- Computer Fundamentals by P K Sinha

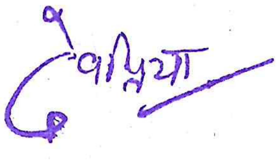

क्रेडिट:-03
घण्टें:-45

BDPHSE-105(3) योगचिकित्सा - I

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगो का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

इकाई 1- योग एवं स्वास्थ्य (9 घण्टे)

इकाई 2- आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य (9 घण्टे)

इकाई 3- आहार चिकित्सा (9 घण्टे)

इकाई 4- व्याधियों के अनुसार पथ्यापथ्य (9 घण्टे)

इकाई 5- प्राथमिक चिकित्सालय अथवा रसोई घर (9 घण्टे)

पाठ्यपुस्तकम्-

उपचार पद्धति, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीड़ित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवा निष्ठा आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगार परक सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

BDPHVA-106(1) - भारतीय संस्कृति बोध - I

क्रेडिट:-03
घण्टें:-45

उद्देश्य

- ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के चयनित सूक्त एवं मन्त्रों से अवगत कराना।
- वैदिक षड्दर्शनों का सामान्य परिचयात्मक ज्ञान कराना।
- गीता एवं उपनिषद् के प्रसिद्ध प्रसंगों का बोध कराना।
- भारतीय नीति ग्रन्थों एवं षोडश संस्कारों से अवगत कराना।

इकाई १– ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के चयनित मंत्र (9 घण्टे)

इकाई २ – योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त, मीमांसा दर्शनों का सामान्य परिचय (9 घण्टे)

इकाई ३ – श्रीमद्भगवद्गीता एवं उपनिषद् (ईश, केन, कठ, मुण्डक, माण्डुक्य, प्रश्न) के चयनित प्रसंग (9 घण्टे)

इकाई ४ – नीति गन्थों का परिचय (चाणक्यनीति, विदुरनीति, भर्तृहरि) (9 घण्टे)

इकाई 5 – सोलह संस्कारों का विस्तृत वर्णन (9 घण्टे)

परिणाम

- वेद के कतिपय प्रसिद्ध सूक्त एवं मन्त्रों का शुद्धतापूर्वक वाचन एवं व्याख्यान करने में विद्यार्थी समर्थ हो जाता है।
- वैदिक षड्दर्शनों के सिद्धान्तों के तुलनात्मक विश्लेषण में दक्ष हो जाता है।
- गीता एवं उपनिषद् के उपर्युक्त चयनित प्रसंगों का अधिगम होगा।
- नीति-शास्त्रों एवं षोडश संस्कारों का विशद् ज्ञान अर्जित होगा।

निर्धारित ग्रन्थ- भारतीय संस्कृति बोध, प्रो0 साध्वी देवप्रिया, दिव्यप्रकाशन

देवप्रिया

BDPHVA-106(2) पर्यावरणविज्ञानम्

Credit:-03

Hours:-45

THE OBJECTIVES OF ENVIRONMENTAL SCIENCE ARE:

(a) Creating the awareness about Environmental Problems among the students.
(b) Imparting basic knowledge about the Environment and its allied problems and solutions.
(c) Developing an attitude of concern for the environment.
(d) Motivating public to participate in environment protection and environment improvement.
(e) Acquiring skills to help the concerned individuals in identifying and solving environmental problems.
(f) Striving to attain harmony with Nature.

COURSE SPECIFIC OUTCOMES

The course will empower the undergraduate students by helping them to:

• Gain in-depth knowledge on natural processes and resources that sustain life and govern economy.

• Understand the consequences of human actions on the web of life, global economy, and quality of human life.

• Develop critical thinking for shaping strategies (scientific, social, economic, administrative, and legal) for environmental protection, conservation of biodiversity, environmental equity, and sustainable development.

• Acquire values and attitudes towards understanding complex environmental economic- social challenges, and active participation in solving current environmental problems and preventing the future ones.

• Adopt sustainability as a practice in life, society, and industry.

Unit 1: Multidisciplinary nature of Environmental Science and Classification of Natural Resources

(6 lectures)

Definition, scope and importance, Need for public awareness

Renewable and non-renewable resources:

Natural resources and associated problems

a) Forest resources: Use and over-exploitation, deforestation, case studies. Timber extraction, mining, dams and their effects on forest and tribal people.

b) Water resources: Use and over-utilization of surface and ground water, floods, drought, conflicts over water, dams-benefits and problems.

c) Mineral resources: Use and exploitation, environmental effects of extracting and using mineral resources, case studies.

e) Energy resources: Growing energy needs, renewable and non-renewable energy sources, use of alternate energy sources. Case studies.

f) Land resources: Land as a resource, land degradation, man induced landslides, soil erosion and desertification

• Role of an individual in conservation of natural resources.

• Equitable use of resources for sustainable lifestyles.

Unit 2: Ecosystems and Functions: **(8 lectures)**

- Biosphere and its formation
- Concept of an ecosystem
- Structure and function of an ecosystem
- Producers, consumers and decomposers
- Energy flow in the ecosystem
- Ecological succession
- Food chains, food webs and ecological pyramids
- Introduction, types, characteristic features, structure and function of the following ecosystem :-

Forest ecosystem, Grassland ecosystem, Desert ecosystem, Aquatic ecosystems (ponds, streams, lakes, rivers, oceans, estuaries)

Unit 3: Biodiversity and Conservation **(8 Lectures)**

- Introduction – Definition: genetic, species and ecosystem diversity.
- Value of biodiversity: consumptive use, productive use, social, ethical, aesthetic and option values
- Biodiversity threats
- Hot-sports of biodiversity
- Threats to biodiversity: habitat loss, poaching of wildlife, man-wildlife conflicts.
- Endangered and endemic species of India
- Conservation of biodiversity: In-situ and Ex-situ conservation of biodiversity.

Unit 4: Environmental Pollution **(6 lectures)**

Definition

- Cause, effects and control measures of:-

a. Air pollution

b. Water pollution

c. Soil pollution

e. Noise pollution

g. Nuclear hazards

- Solid waste Management: Causes, effects and control measures of urban and Industrial wastes
- Role of an individual in prevention of pollution.
- Disaster management: floods, earthquake, cyclone and landslides.
- Water conservation, rain water harvesting, watershed management
- Climate change, global warming, acid rain, ozone layer depletion. Case Studies.

- Environmental Acts and Policies (water, wildlife, biodiversity, air etc.)

Field Visits to Protected Areas, Visit to Research Organisation and Industries including Bird Watching Program/Biodiversity Observations

Recommended Books:

- Essential Environmental Studies by S P Misra & S. N Pandey (Anr Books Pvt. Ltd.)
- Environmental Studies by J P Sharma, Laxmi Publications,
- Paryavaran Addhayan (Hindi version) by Anubha Kaushik & C P Kaushik, New Age Publications
- Ecology & Environmental Biology by Ramdeo Misra, English Book Depot
- Environment and Ecology by R.Rajagopalan, OAK BRIDGE
- Ecology by Dr. Kailash Chaudhary & Dr. Ram Prakash Saran, IFAS Publications
- Fundamentals of Ecology by Eugene Pleasants Odum, CENGAGE Learning

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम - B.A. दर्शन प्रथम वर्ष

Semester-II

क्रेडिट:-06

घण्टें:-90

BDPHMJ-201 - *न्यायदर्शनम्* (प्रथम एवं द्वितीय अध्याय)

उद्देश्य:-

- न्याय के ऐतिहासिक एवं पौराणिक तथ्यों से अवगत कराना।
- न्याय के सम्बन्धित भाष्य, वार्तिक एवं विभिन्न टीकाओं से परिचय करवाना।
- प्रथम दो अध्यायों के सूत्रों के सूत्रार्थ एवं भावार्थ को स्पष्ट कराना तथा साथ ही सूत्रों को कण्ठस्थ कराना।

(प्रथम एवं द्वितीय अध्याय)

इकाई प्रथम :- प्रमाणादि षोडश पदार्थों का उद्देश्य एवं लक्षण (20 घण्टे)

इकाई द्वितीय :- वाद, जल्प एवं वितण्डा का स्वरूप, हेत्वाभास का लक्षण एवं प्रभेद, छल का स्वरूप एवं प्रकार। (15 घण्टे)

इकाई तृतीय :-प्रमाण सामान्य परीक्षा प्रकरण, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द प्रमाण की परीक्षा, वेद का प्रामाण्य। (20 घण्टे)

इकाई चतुर्थ :- प्रमाण का चतुष्ट्वत्व, शब्द का अनित्यत्व (20 घण्टे)

इकाई पञ्चम :- शब्द प्रमाण प्रकरण, शब्दशक्तिपरीक्षा प्रकरण (15 घण्टे)

परिणाम:-

- न्याय के षोडश पदार्थों के उद्देश्य एवं लक्षण का बोध कर लेता है।
- चतुर्विध प्रमाणों के विस्तृत विवेचन करने में कुशल हो जाता है।
- उपरोक्त सूत्रों का कण्ठस्थ कर लेता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक - न्यायदर्शन, आचार्य उदयवीर शास्त्री ,
प्रकाशक-विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006
एवं न्यायदर्शनम्, प्रकाशक-दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

सहायक-ग्रन्थ- विद्योदयभाष्य सहित न्यायदर्शन (आचार्य आनन्द प्रकाश)।
प्रकाशक- आर्ष शोध संस्थान अलियाबाद।

BDPHMN-202 - वैदिकेतर दर्शन विवरणात्मक

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- माधवाचार्य के दार्शनिक पक्षों का परिचय कराना।
- चार्वाक दर्शन की दार्शनिक अवधारणाओं का परिचय कराना।
- जैन दर्शन की आधारभूत अवधारणाओं का परिचय कराना एवं इसके विभिन्न सम्प्रदायों का परिचय कराना।
- बौद्ध दर्शन के मूल सिद्धान्तों से अवगत कराना एवं इसके प्रमुख सम्प्रदायों (शून्यवाद, विज्ञानवाद, वैभाषिक, सौत्रान्तिक)का परिचय कराना।

प्रथम इकाई:-भारतीय दर्शन की सामान्य अवधारणाएँ एवं परिचय सूत्रकार परिचय।

10 घण्टे

द्वितीय इकाई:- चार्वाक दर्शन का परिचय (ज्ञान मीमांसीय एवं तत्वमीमांसीय अवधारणा, सृष्टि प्रक्रिया)।

10 घण्टे

तृतीय इकाई:-जैन दर्शन का परिचय, कर्म के प्रकार, ज्ञान मीमांसा, क्रमबद्ध पर्याय:, भाग्यवाद, संकल्प की स्वतंत्रता और निरीश्वरवाद। 20 घण्टे

चतुर्थ इकाई:- बौद्ध दर्शन:, आर्य सत्य, क्षणिकवाद, अनात्मवाद की अवधारणा, विभिन्न सम्प्रदाय (शून्यवाद, विज्ञानवाद, वैभाषिक एवं सौतान्त्रिक।) 20 घण्टे

परिणाम- 1. वैदिक दर्शन से भिन्न भारतीय दार्शनिक सिद्धान्तों से विद्यार्थियों का परिचय होगा।

2. आस्तिकता, नास्तिकता, आत्मा एवं सृष्टि प्रक्रिया समझने के लिए अन्य भारतीय दार्शनिक सिद्धान्तों की तुलनात्मक जानकारी प्राप्त होगी।

3. भारतीय दर्शनों की सम्पूर्ण अवधारणाओं एवं सिद्धान्तों को विस्तारपूर्वक समझने का अवसर प्राप्त होगा।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सर्वदर्शन संग्रह, प्रो. उमाशंकर शर्मा (ऋषि)

प्रकाशक-चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

क्रेडिटः–04
घण्टेंः–60

BDPHID-203(1)- प्राचीन भारत का इतिहास

उद्देश्यः–

इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मौर्य काल के पश्चात से लेकर गुप्त काल तक की ऐतिहासिक प्रक्रियाओं को समझना है। जिसमें मौर्योत्तर काल में हूए विदेशी आक्रमणों के प्रभाव से लेकर महान गुप्तों के शासन काल के स्वर्णिम इतिहास से अवगत कराना है।

इकाई प्रथम–	मौर्योत्तर राजवंशों का परिचय	(15 घण्टे)
इकाई द्वितीय–	विदेशी राजवंश	(13 घण्टे)
इकाई तृतीय–	गुप्तवंश परिचय	(16 घण्टे)
इकाई चतुर्थ–	मौर्योत्तर काल से गुप्त काल तक सांस्कृतिक विकास	(16 घण्टे)

परिणामः–

1. विदेशी आक्रमणों के प्रभाव के प्रति दृष्टिकोण की समझ विकसित करने में।
2. मौर्य काल के बाद के राजवंशों के विभिन्न शासकों के कार्यों में अंतर पर विचारों का आदान–प्रदान करने में।
3. गुप्त साम्राज्य की महानता को स्थापित करने में।
4. वाकाटक काल की सांस्कृतिक उपलब्धियों की व्याख्या करने में।

पाठ्य पुस्तक- शर्मा, एल0 पी0: प्राचीन भारत, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2022

उपेन्द्र सिंह: प्राचीन और पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास पाषाण काल से 12 वीं शताब्दि ई0 दिल्ली 2016.

BDPHID-203(2)- भारतीय समाज

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

उद्देश्य:
इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी भारतीय समाज को समझने का प्रयास करेंगें। भारतीय सामाजिक परम्परा के अन्तर्गत आश्रम व्यवस्था, पुरूषार्थ चतुष्ट्य आदि की प्रकृति को सीखेंगे। छात्र भारत में प्राचीन विवाह पद्धति और प्राचीन भारतीय परिवार की व्यवस्था के द्वारा भारतीय समाज, राजनीति, धर्म और अर्थव्यवस्था में आए बदलावों के बारे में जानेंगे। छात्र समझेंगे कि कैसे वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गयी।

इकाई प्रथम- भारतीय समाज की संरचना (16 घण्टे)

इकाई द्वितीय- हिन्दू सामाजिक संगठन आश्रम, पुरुषार्थ, कर्म सिद्धान्त (16 घण्टे)

इकाई तृतीय- भारत में विवाह और परिवार (14 घण्टे)

इकाई चतुर्थ- भारत में जाति व्यवस्था का परिचय (14 घण्टे)

परिणाम:
1. भारतीय समाज की व्याख्या करने में।
2. सामाजिक संगठनों के माध्यम से जीवन में किये जाने वाले सुधारों की व्याख्या करने में।
3. वर्तमान समाज को सही दिशा दिखाने के लिए विवाह पद्धतियों व भारतीय परिवार प्रणाली का वर्णन करने में।
4. भावी पीढ़ियों को प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था को अपनाने के लिए प्रेरित करने में।
5. वर्तमान सामाजिक संकट से छुटकारा पाने के लिए भारतीय समाज के मूल स्वरूप की समझ विकसित करने में।

पाठ्य पुस्तक- राव, सी.एन. शंकर, भारतीय समाज का समाजशास्त्र, एस.चंद एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड (संशोधित संस्करण), नई दिल्ली 2004.

BDPHID-203(3)- भारत का स्वतंत्रता संग्राम एवं स्वातंत्र्योत्तर भारत

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

यह पाठ्यक्रम इस बात का परिचय देता है कि भारत में क्षेत्रीय शक्तियाँ कैसे स्थापित हुईं और कैसे समय के साथ, कंपनी भारत में पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त करने में सफल रही। छात्र ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत पर कब्जा करने के 200 वर्षों के दौरान राज्य की औपनिवेशिक प्रकृति को समझना सीखेंगे। छात्र भारत में कंपनी के प्रभुत्व से भारतीय समाज, राजनीति, धर्म और अर्थव्यवस्था में आए बदलावों के बारे में जानेंगे। छात्र समझेंगे कि कैसे निगम द्वारा आर्थिक शोषण ने ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ भारतीय आंदोलन को जन्म दिया। छात्र उन विभिन्न कारणों को समझेंगे जिनके कारण 1857 का महान क्रांति हुयी।

इकाई प्रथम-	1857 का स्वतंत्रता संग्राम	(16 घण्टे)
इकाई द्वितीय-	बंगाल विभाजन और स्वदेशी आन्दोलन	(16 घण्टे)
इकाई तृतीय-	हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन	(14 घण्टे)
इकाई चतुर्थ-	गांधीवादी युग का परिचय	(14 घण्टे)

पाठ्यक्रम परिणामः

1. भारत में कंपनी के शासन की व्याख्या करने में।
2. सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलनों, न्यायपालिका और शैक्षिक सुधारों की व्याख्या करने में।
3. वे आधुनिक भारत में कंपनी के शासन के तहत भूमि की राजस्व प्रणालियों का वर्णन करने में।
4. भावी पीढ़ियों को भारतीय राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता संग्राम को अपनाने के लिए प्रेरित करने में।
5. वर्तमान आर्थिक संकट से छुटकारा पाने के लिए स्वदेशी अभियान लागू करने में।

पाठ्य पुस्तकें-

1. महाजन, बी.डी.आधुनिक भारतीय इतिहास, एस.चंद, नई दिल्ली, 2022
2. चानरा, बी. इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडेंस, एस.चंद, नई दिल्ली,2022

देवप्रिया

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

BDPHID-203(4)- संस्कृतसाहित्यम् - II

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

1. संस्कृत व्याकरण से सम्बद्ध शिक्षा ग्रन्थ में वर्णित वर्णों के उच्चारण से सम्बन्धित प्रयत्नों का बोध कराना।
2. व्याकरण सम्बन्धी शेष संज्ञाओं का पुन: बोध कराना।
3. व्याकरण में प्रयुक्त परिभाषा सूत्रों का सामान्य बोध, अच् सन्धि तथा हल् सन्धि विषयक ज्ञान कराना।

प्रथम इकाई- कारक प्रकरणम् - विभक्तिश्च (15 घण्टे)

कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण कारक ।

द्वितीय इकाई- समासप्रकरणम् - (15 घण्टे)

तत्पुरुष समास, बहुब्रीहि समास, द्वन्द समास, अव्ययीभाव समास ।

तृतीय इकाई- शब्दरूप, धातुरूप (1-15 अभ्यास पर्यन्त), अनुवाद, संख्याएँ (1-100) । (15 घण्टे)

चतुर्थ इकाई- रघुवंश महाकाव्यम् - द्वितीय: सर्ग: । (15 घण्टे)

परिणाम-

1. संस्कृत व्याकरण के आधारभूत ज्ञान से शब्दों की वैज्ञानिक पद्धति से परिचित होकर शब्दार्थ व वाक्यार्थ बोध करने व कराने में सक्षम हो जाता है।
2. वर्णोच्चारण शिक्षा के बोध से वर्णों एवं शब्दों के शुद्धतापूर्वक उच्चारण करने में समर्थ हो जाता है तथा वाणी में व्याख्यान का सामर्थ्य विकसित हो जाता है।
3. संज्ञाओं के ज्ञान से पाणिनीय व्याकरण को सम्यक् रूप से समझने एवं समझाने में समर्थ हो जाता है।
4. सन्धियों के परिचय से सन्धि विच्छेद व शब्दार्थ बोध के माध्यम से संस्कृत वाङ्मय में आये हुए सन्धियुक्त पदों का ज्ञान करने व कराने में सक्षम हो जाता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-

रघुवंश महाकाव्यम् - प्रकाशक- चौखम्भा ओरियन्टालिया, दिल्ली - 11007, (भारत)।
व्याकरण चन्द्रोदय 2 -डॉ. आचार्या साध्वी देवप्रिया, प्रकाशक-दिव्यप्रकाशन।

सहायक ग्रन्थ - रचनानुवाद कौमुदी, प्रकाशक- विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी-22100

BDPHAE-204 **Advanced Communicative English**

Credit:-02
Hours:-30

Course Objectives:

- To develop advanced speaking, listening, reading, and writing skills in English.
- To enhance the ability to communicate effectively in professional, academic, and social settings.
- To improve pronunciation, fluency, and vocabulary.
- To provide exposure to various forms of written communication, including reports, essays, and research papers.

Unit 1: Vocabulary Expansion **6 Hours**

Topics	Prescribed Text
• Using phrasal verbs, idioms, and collocations appropriately. • Learning words in context (academic, professional, and social contexts).	*Advanced English Vocabulary in Use* by Micheal McCarthy and Felicity O'Dell. Cambridge

Unit-2: Reading Comprehension and Analysis **8 Hours**

Topics	Prescribed Texts
• Strategies for reading academic texts, articles, and books. • Analysing arguments, structure, and evidence in texts.	The Efficient Reading Skills by Iyabode Omolara Akewo Daniel in *Communication and Language Skills*. Cambridge University Press.
Critical Analysis of a literary text	*The Mahabharata*: A Shortened Modern Prose Version of the Indian Epic by R.K. Narayan

Unit-3: Advanced Speaking Skills **8 Hours**

Topics	Prescribed Texts
Public Speaking • Preparing speeches and presentation • Techniques for effective public speaking (Body language, eye contact and voice modulation) **Debates and Group Discussions** • Strategies for formal debates • Critical Thinking and Analytical Skills • Leadership and Teamwork in Discussions **Interview Skills** • Different types of interviews • Identifying your strengths, weaknesses, skills, and achievements • Prepare answers to typical interview questions. • Understanding body language and other non-verbal cues.	*Communication Skills* by Leena Sen, 2nd Edition, PHI Learning.

Unit 4: Academic and Professional Writing	8 Hours
Topics	Prescribed Texts
Essay Writing • Structure of Academic Essays • Developing arguments Academic Writing • Conventions of Academic Writing • Summarizing and Paraphrasing	Academic Writing and Composition" by Sharmila Majumdar in Introduction to Undergraduate English, Book 2 by Parthapratim Bandyopadhyay et al. Cambridge University Press, 2018. pp.105-137.
Business Writing • Writing formal emails, memos, and reports. • Creating professional documents (e.g., CVs, cover letters). • Writing persuasive proposals and business letters.	*Communication Skills* by Leena Sen, 2nd Edition, PHI Learning.

Course Specific Outcomes

By the end of the course, students should be able to:

- Ability to speak English confidently and fluidly in diverse social, academic, and professional contexts.
- Advanced skills in reading and understanding complex texts, including academic articles, reports, and literary works.
- Ability to deliver clear, confident, and structured presentations in both professional and academic environments.
- Ability to perform well in interviews, networking events, and other job-related communication tasks.

Method of Teaching & Assessment- Videos, Audio clippings, discussion, written and oral exercises

Suggested Readings:

- Adair, John. *Effective communication*. 4th Edition, Pan Mac Millan, 2009.
- Dawes, L. *The Essential Speaking and Listening*. Routledge, 2008.
- Lewis, Norman. *Word Power Made Easy.*
- Singh, R.P. *An Anthology of English Essays*. Oxford, 2000.
- Seely, John. *The Oxford Guide to Writing and Speaking*. Oxford University Press, 1998.

BDPHSE-205(1) योगचिकित्सा - II

क्रेडिटः-03
घण्टें:-45

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगो का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

इकाई 1-मिट्टी चिकित्सा, सूर्य चिकित्सा (9 घण्टे)

इकाई 2- जल चिकित्सा (हाइड्रोथेरेपी) (9 घण्टे)

इकाई 3- मसाज के विविध प्रकार एवं प्रयोग (9 घण्टे)

इकाई 4- प्राकृतिक चिकित्सा (नैचुरोपैथी) (9 घण्टे)

इकाई 5- वैकल्पिक चिकित्सा एवं षट्कर्म (9 घण्टे)

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीड़ित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवानिष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगारपरक सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकारपरक उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

पाठ्यपुस्तकम्-

उपचार पद्वति, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

देवप्रिया

BDPHSE-205(2) Intermediate Knowledge of Vocal & Instrumental

Credit:-03
Hours:-45

UNIT- I Merits & Demerits of Vocalist, Margi /Desi Sangeet , Brief Definition about Raag, five important Rules of Raag , Jaati of Raag & Knowledge of 10 Thaat its Basic Speciality, Brief intro of Mel raag.

12 Hours

UNIT- II Biography of Musicians- Bhimsen Joshi, Pandit Vishnu Narayan Bhatkhande, Effect of Sound in our practical life, **Definitions:-** Gamaks-(Meed, kan,Khatka,Murki), Alankar no 5 to 10 (According to Bhatkhande Kramik pustak malika-1), AROH-AVROH-PAKAD-VADI-SAMVADI of Raag Yaman. Merits & Demerits of Musicians, Definition of following terms: Sum, Tali, Khali &Vibhag, Tuning of Tabla.

12 Hours

UNIT- III Practice of Previous Ten Alankar, Practice of Aroh , Avroh ,Pakad in Raag Yaman & Lakshan Geet, Practice of two Bhajan/Geet/ghazal Based on Raag (Yaman/Bhairavi/Darbari-kanhda)

12 Hours

UNIT- IV Tabla– Playing Skill of Basic Bol (NA, TI Teen, Dha Dhi, Dheen) One Kayda In Teentaal.

Harmonium- Playing Skills of One (Bhajan, Patriotic Song) **9 Hours**

BDPHSE-205(3) गोविज्ञानम्

क्रेडिट:-03
घण्टें:-45

उद्देश्य:-

- गो सम्बन्धित साहित्यों से परिचय कराना।
- गो के विभिन्न देशी नस्लों से अवगत कराना।
- गो के सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक महत्व का बोध कराना।

प्रथम इकाई- गो शब्द का अर्थ एवं पर्यायवाची शब्द, गोवंश परिचय (नस्लें), देशी गोवंश तथा विदशी गायों में अन्तर, गो का अन्य पशुओं से वैशिष्ट्य, गो महात्म्य के विषय में महापुरुषों के विचार, प्राचीन काल में गोसंवर्धन का स्वरूप तथा वर्तमान काल में गोसंवर्धन का स्वरूप। भारत के विभिन्न प्रान्त में पायी जाने वाली गो नस्लें एवं पालन। (9 घण्टे)

द्वितीय इकाई- संस्कृत वाङ्मय में गो का महत्व- वेदों (ऋग्वेद,यजर्वेद,सामवेद,अथर्ववेद) के अनुसार गो महिमा, स्मृतियों, उपनिषदों, आयुर्वेद ग्रन्थों, पुराणों, महाभारत, रामायण एवं अन्य ग्रन्थों के अनुसार गो महिमा। (9 घण्टे)

तृतीय इकाई- विभिन्न आयुर्वेद ग्रन्थों के अनुसार- पञ्चगव्य का औषधीय प्रभाव एवं अरोग्यता- (9 घण्टे)

1. गोदुग्ध
2. गोदधि
3. गोनवनीत तथा गोघृत
4. गोमूत्र
5. गोमय (गोबर), गोवर्ण, गोनस्ल एवं गो आयु का वैशिष्ट्य।
6. गोवंश सुधार की आवश्यकता दुधारु तथा स्वस्थ गोवंश।

चतुर्थ इकाई- गो मेध यज्ञ का वास्तविक स्वरूप, गोदान की परम्परा एवं गो पूजा का महात्म्य, गो हत्या एवं गोमांस सेवन का निषेध, वर्तमान परिपेक्ष्य में गो संवर्धन की आवश्यकता एवं लाभ तथा इसकी वैज्ञानिकता। गो सेवा से विभिन्न रोगों से मुक्ति, पाप का क्षय, पुण्य की प्राप्ति। उन्नत कृषि हेतु गो संरक्षण। जैविक खाद व कीटनाशक के रूप में गोमूत्र का प्रयोग।

(9 घण्टे)

पञ्चम इकाई- सुन्दर, समृद्ध आर्थिक आत्मनिर्भर व्यक्ति तथा समाज के लिए गो महत्व, भारत वर्ष की प्रमुख गोशालाएं एवं गोधन, वर्तमानकाल में गोपालन की समस्या एवं समाधान। उन्नत बैल अथवा नन्दी का सदुपयोग। गो सवंर्धन में योगर्षि स्वामी रामदेव जी महाराज (पतंजलि योगपीठ) का योगदान। गोशालाओं की आत्मनिर्भरता के लिए गोमूत्र संयत्र तथा गोमय (गोबर) से बनी समिधा एवं अन्य वस्तुओं का निर्माण। गो आधारित प्रेरक कथाएं तथा सूक्तियां। (9 घण्टे)

परिणाम:-

- देशी गोवंश संरक्षण के प्रति सकारात्क अभिरूचि का विकास होगा।
- गो को आर्थिक रूप से प्रयोग एवं विनियोग करने में सहायता प्राप्त होगी।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक:-गौविज्ञानम् डॉ.स्वामी परमार्थदेव प्रकाशन-दिव्य प्रकाशन

देवप्रिया

BDPHVA-206(1)- भारतीय संस्कृति बोध - II

क्रेडिट:-03
घण्टें:-45

उद्देश्य

- सामवेद एवं अथर्ववेद के चयनित प्रसिद्ध मंत्रों का वाचन एवं परिचयात्मक ज्ञान कराना।
- तैतिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक व श्वेताश्वतर के चयनित प्रसंगों से अवगत कराना।
- देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, प्रात: जागरण मंत्र, शयन मंत्रो को आत्मसात कराना।
- वर्णाश्रम व्यवस्था, पञ्चमहाव्रत, पञ्चमहाभूत, पञ्चप्राण से अवगत कराना।

इकाई 1- सामवेद एवं अथर्ववेद के चयनित मंत्र। (8 घण्टे)

इकाई 2- उपनिषद् (तैत्तरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, श्वेताश्वतर) के चयनित प्रंसग। (9 घण्टे)

इकाई 3- रामायण एवं महाभारत का चयनित प्रसंग एवं नवधा भक्ति का सामान्य परिचय। (9 घण्टे)

इकाई 4- दैनिक दिनचर्या के विशेष मन्त्र, देवयज्ञ, जीवन दर्शन, पंचमहायज्ञ। (9 घण्टे)

इकाई 5- पंचप्राण, वर्ण–व्यवस्था, पंचकोश, पञ्च महाव्रत, अष्टाङ्गहृदय। (10 घण्टे)

परिणाम

- उपर्युक्त चयनित मंत्रों को शुद्धतापूर्वक वाचन एवं व्याख्यान में कुशल होना।
- उपरोक्त उपनिषद् के प्रसिद्ध प्रसंगों का विस्तृत ज्ञान अर्जित होना।
- पञ्चमहायज्ञों को अपने जीवन में विनियोग करने में समर्थ होना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक:- भारतीय संस्कृति बोध, प्रो0 साध्वी देवप्रिया, दिव्यप्रकाशन

BDPHVA-206(2)- योगविज्ञानम् (प्रयोगात्मकम्)

क्रेडिट:-03
घण्टें:-45

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, procedure and contraindications of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.

Unit I: Eight Baithak by Yogrishi Swami Ramdev ji (9 Hours)

Ardhbaithak, Purnabaithak, Rammurtibaithak, Pahalwani baithak-1, Pahalwanibaithak-II. Hanuman baithak -1, Hanuman baithak-11,

Unit II: Twelve Dand by Yogrishi Swami Ramdev ji (9 Hours)

Simple Dand, RammurtiDand, VakshvikasakDand, Hanuman Dand, VrishchikDand-I, VrishchikDand-II, Parshvadand, Chakradand, Palatdand, Sherdand, Sarpdand, Mishradand (mixed Dand)

Unit III: Surya Namaskara &Yogasana (Supine lying postures) (9 Hours)

Suryanamaskar, Naukasana, Pavanamuktasana, Utthana-padasana, Padavrittasana, Chakrikasana, Chakkichalana, ArdhaHalasana, Halasana, Setubandhasana, Sarvangasana, Matsyasana, Chakrasana, Shavasana.

Unit IV: Pranayama (9 Hours)

NadiShodhana (Technique 1: Same Nostril Breathing), NadiShodhana (Technique 2: Alternate Nostril Breathing), NadiShodhana (Technique 3: Alternate Nostril Breathing + Antarkumbhak); NadiShodhana (Puraka + AntarKumbhak + Rechaka + BahyaKumbhak) (1:4:2:2);

Unit V: Mudra & Shatkarmas (Only One kriya) (9 Hours)

Hasta Mudra: Chin, Jnana, Hridaya, Bhairav, Yoni, Pran, Apan, Apanvayu, Shankh, Kamajayi, Shatkriya, Neti (Jalneti, Rubber Neti)

Continuous Evaluationby the Teachers

TEXT BOOKS

1. Balkrishna Acharya: (2015), DainikYogabhyasakram, DivyaPrakashan, Haridwar.
2. Randev Y.S. 2015: Dand-baithak, DivyaPrakashan, Haridwar
3. Saraswati S. S. (2006). Asana Pranayama and Mudra Bandha, "Yoga Publication Trust." Munger, Bih**Continuous Evaluationby the Teachers**

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

क्रेडिट:-05
घण्टें:-75

पाठ्यक्रम - B.A. द्वितीय वर्ष

Semester -III

BDPHMJ-301 न्यायदर्शनम् (तृतीय अध्याय)

तृतीयाध्याय

उद्देश्य- 1. तृतीयाध्याय के सूत्रार्थ एवं भावार्थ से अवगत कराना।
2. आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि एवं मन नामक छ: प्रमेयों का बोध कराना।

प्रथम इकाई- इन्द्रियव्यतिरिक्तात्माप्रकरण, शरीरव्यतिरिक्तात्मप्रकरण, चक्षुरद्वैतप्रकरण, मनोव्यतिरिक्तात्मप्रकरण, आत्मनित्यताप्रकरण, शरीरपरीक्षाप्रकरण। 20 घण्टे

द्वितीय इकाई - इन्द्रियभौतिकत्वप्रकरण, इन्द्रियनानात्वप्रकरण, अर्थपरीक्षाप्रकरण। 15 घण्टे

तृतीय इकाई - बुद्धि अनित्यताप्रकरण, क्षणभंगप्रकरण, बुद्धेरात्मागुणत्वप्रकरण। 20 घण्टे

चतुर्थ इकाई - बुद्धेरुत्पन्नापवर्गत्वप्रकरण, बुद्धेशरीरगुणव्यतिरेकप्रकरण, मनपरीक्षाप्रकरण, अदृष्टनिष्पाद्यत्वप्रकरण। 20 घण्टे

परिणाम- 1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र सूत्रों के सूत्रार्थ एवं भावार्थ क़रने में समर्थ हो जाता है।
2. आत्मादि छ: प्रमेयों का तार्किक एव प्रामाणिक विश्लेषण करने में दक्ष हो जाता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम- न्याय दर्शन, आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजय कुमार, गोविन्दराम, हासानन्द, 4408 नई सड़क, नई दिल्ली-110006
न्यायदर्शनम्-डॉ. साध्वी देवप्रिया, प्रकाशक- दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

BDPHMJ-302 न्यायदर्शनम् (चतुर्थ एवं पंचम अध्याय)

क्रेडिट:-06
घण्टें:-90

उद्देश्य- 1. चुतर्थ अध्याय के सूत्रार्थ एवं भावार्थ से अवगत कराना।
2. प्रवृति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दुख एवं अपवर्ग नामक छः प्रेमेयो से अवगत कराना।
3. विभिन्न बौद्धादि सिद्धान्तों का समीक्षात्मक ज्ञान कराना।
4. जाति एवं निग्रहस्थानों से परिचय कराना।

प्रथम इकाई – प्रवृत्तिपरीक्षाप्रकरण, दोषत्रैराश्यप्रकरण, प्रेत्यभावपरीक्षाप्रकरण, शून्यतोपादानप्रकरण, ईश्वरोपादानप्रकरण, आकस्मिकत्वोपादानप्रकरण, सर्वानित्यत्वनिराकरणप्रकरण, सर्वनित्यत्वनिराकरणप्रकरण, सर्वपृथक्त्वनिराकरणप्रकरण, सर्वशून्यता निराकरणप्रकरण, संख्यैकान्तवादप्रकरण। 20 घण्टे

द्वितीय इकाई – फलपरीक्षा प्रकरण, दु:खपरीक्षा प्रकरण, अपवर्गपरीक्षा प्रकरण। 20 घण्टे

तृतीय इकाई – तत्वाज्ञानउत्पत्ति प्रकरण, अवयवी प्रकरण, परमाणुनिरवयवत्व प्रकरण। 20 घण्टे

चतुर्थ इकाई – बाह्यार्थभंगनिराकरणप्रकरण, तत्वज्ञानविवृद्धि प्रकरण, तत्वज्ञानपरिपालन प्रकरण 20 घण्टे

पंचम इकाई – जाति व निग्रहस्थान का परिचयमात्र 10 घण्टे

परिणाम- 1. सूत्रार्थ एव भावार्थ स्पष्ट हो जाता है।
2. प्रकृति, दोष इत्यादि छः प्रमेयों का तार्किक एवं विश्लेषणात्मक ज्ञान हो जाता है।
3. विभिन्न दार्शनिक सिद्धान्तों में तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक बुद्धिकौशल प्राप्त होता है।

निर्धारित पाठ्यक्रम- न्याय दर्शन, आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजय कुमार, गोविन्दराम, हासानन्द, 4408 नई सड़क, नई दिल्ली-110006
न्यायदर्शनम्-डॉ. साध्वी देवप्रिया, प्रकाशक- दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

BDPHMN-303, भाषाविज्ञानं मनोविज्ञानं च क्रेडिट:-04

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :- घण्टें:-60

- भाषा विज्ञान के मूल तत्वों की उत्पत्ति-भेद-वर्गीकरण आदि की जानकारी प्राप्त कराना।
- भारोपीय भाषाओं का परिचय कराना।
- भाषा विज्ञान के विविध अभावों से अवगत कराना यथा-लिपि, भाषा वैज्ञानिकों की जानकारी प्रदान कराना।
- मनोवैज्ञानिक परीक्षण की समझ छात्रों को यह समझाने के लिए कि मनोवैज्ञानिक परीक्षण क्या हैं और उनका उद्देश्य क्या होता है।
- परीक्षणों के प्रकार और उपयोग विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षणों (जैसे मानसिक अवस्था, बौद्धिक क्षमता, व्यक्तित्व परीक्षण) को पहचानने और उनका उपयोग समझने के लिए।
- मापदंडों की पहचान: यह समझने के लिए कि कैसे परीक्षणों की वैधता (validity) और विश्वसनीयता (reliability) की जांच की जाती है।
- परीक्षणों की आदर्श प्रक्रिया: मनोवैज्ञानिक परीक्षणों को सही तरीके से डिजाइन और प्रशासनित करने के कौशल को सीखने के लिए।

इकाई 1- भाषा विज्ञान परिभाषा, भाषा की उत्पत्ति, वर्गीकरण, संसार की भाषाएँ, प्राचीन एवं वर्तमान भाषाएं। **(15 घण्टे)**

इकाई 2- भारोपीय भाषा परिवार, मध्यकालीन, आधुनिक भारतीय आर्यभाषा-प्राचीन **(15 घण्टे)**

इकाई 3- भाषा विज्ञान का इतिहास, लिपि, प्राचीन भाषावैज्ञानिक पाणिनि, पतञ्जलि, भर्तृहरि, यास्क, भाषाविज्ञान-व्याकरण-निरूक्तानां का परस्पर सम्बन्ध। **(15घण्टे)**

(15 घण्टे)

इकाई 4- Psychological testing and its application

General concept of Psychological testing: meaning and definitions, utility of psychological testing, types of psychological testing. Brief and general introduction of psychometric tests and psychological equipment.

Psychometric Tests

- Aggression Scale
- Self-Esteem
- Achievement Motivation
- Stress Scale
- Attitude Scale
- Emotional Competency
- Emotional maturity
- Mental Health Inventory
- Adjustment Inventory
- Judging Emotional Ability
- Adjustment Inventory

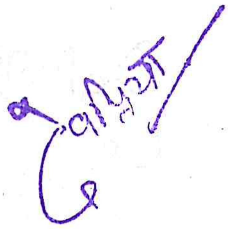

Psychological Equipment:

- Human Maze Learning Apparatus
- Finger Dexterity
- Tachistoscope
- Two Hand Co-ordination
- Mirror Drawing Apparatus

पाठ्यक्रम के परिणाम :-

- भाषा वैज्ञानिकों के बारे में विस्तृत एवं प्रामाणिक जानकारी होगी।
- भाषा विज्ञान के मूल तत्वों की वैज्ञानिक दृष्टि समझते हुए भाषाई विविधता का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- भारोपीय भाषा बोध के साथ-साथ भाषा का ऐतिहासिक महत्व एवं महाद्वीपों से सम्बन्ध की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे भाषा विज्ञान के विविध अभावों से अवगत कराना यथा लिपि भाषा वैज्ञानिकों की जानकारी प्रदान कराना।
- परीक्षणों के चयन और प्रशासन: छात्र विभिन्न प्रकार के परीक्षणों का चयन करने में सक्षम होंगे और सही तरीके से उनका प्रशासन कर सकेंगे।
- आधुनिक परीक्षण तकनीकों का उपयोग: छात्र नई और आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण तकनीकों का उपयोग करने में सक्षम होंगे और उनके प्रभाव का मूल्यांकन कर सकेंगे।

पाठ्यपुस्तकम्- भाषाविज्ञानम् - कर्णसिंह:-साहित्य भंडार मेरठ

भाषा विज्ञान, डॉ.भोलानाथ तिवारी-किताब महल प्रयागराज

BDPHID-304(1) स्वर्णकाल का इतिहास क्रेडिट:-02

घण्टें:-30

Course Objectives-

The main objective of this paper is to understand historical processes between 3rd Century AD and 6th Century AD. Though the chronology of the paper starts at 3rd Century AD, an initial background is given starting from thst post Mauryan period starting with the Gupta and ending with post Gupta scenario,

Unit I: Political History of Gupta Period (7 Hours)

Origin and development of Gupta Dynasty, Early History of Guptas- Shri Gupt and Ghatotkach, Founder of the great Gupta Dynasty- Chandragupta I, Achievements of Samudragupta, Mighty, Virtuous, Digvijayi and the great Gupta king who presented the concept of Greater India.

Unit II: Political History of Gupta Period (7 Hours)

Achievements Chandrgupta Vikramadity, Kumargupta and his successor- Skandgupta and Decline of the Imperial Guptas, Government and functions of the Council of Ministers during the Gupta period.

Unit III: Religious Status in the Gupta Period (8 Hours)

Vedic Religion- Surya, Life of Tapovan, Method of Yagya, **Puranic Religions**: **Shaivism**: Bhakti Tradition of Shavism: Pashupat Tradition, Kapalik Tradition, Kalmukh Tradition, Bhakti Tradition, **Vaishnavism:** Panchratr, Bhagavat, Krishna and doctrine of embodiment: Bhagavan Vishnu ke das Avatar, **Shaktism:** Trideviyan- Historical sources of Lakshmi, Durga and Saraswati.

Unit IV: Literary and Creator (8 Hours)

Development of Sanskrit literature - Fine literature like Avadan, Jataka Mala, Prayag Prashasti composed by Harishena, great poet Kalidas's texts, authors like Bharavi, Bhatti, Shudrak, Visakhadatta, Arthashastra, Dharmashastra, Buddhist literature and Jain literature.

Course Outcome:

The paper ensures that the students learn the changes in political, social, economic and cultural scenario happening during this chronological span. It will also teach them how to study sources to the changing historical processes.

Recommended Readings:

Pandey, V.C. Prachin Bharat ka Rajnitik Tatha Sanskritik Itihas, 2 Parts, Central Book Dipo Allahabad,

Sharma, L.P.: History of Ancient India,

Raychoudhury, H.C., Prācīn Bhārata Kā Rājanītika Itihāsa (Hindi), Allahabad,

Singh, U., A History of Ancient and Early Medieval India, From The Stone Age To The 12th Century, Delhi 2016

Basham A. L. The Wonder that was India, London

BDPHID-304(2) समाजशास्त्रीय सिद्धान्त

क्रेडिट:-02
घण्टें:-30

उद्देश्य-

- समाजशास्त्र का बोध।
- सामाजिक अवधारणाओं का ज्ञान।
- सामाजिक संरचना का बोध।
- सामाजिक स्तरीकरण एवं गतिशीलता का ज्ञान।
- संस्कृति एवं सभ्यता के विश्लेषण का ज्ञान।

प्रथम इकाई 06 घण्टे

समाजशास्त्र का अर्थ, समाजशास्त्र की परिभाषा, समाजशास्त्र का क्षेत्र एवं महत्व, समाजशास्त्र की प्रकृति, सामाजिक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र,समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धभारत में समाजशास्त्र का इतिहास।

द्वितीय इकाई- 06 घण्टे

समाज की मौलिक अवधारणाएँ,समुदाय,समिति एवं संस्थाओं का अर्थ एवं अवधारणा, सामाजिक समूह, मानव एवं पशु समाज,सामाजिक संस्थाएं, परिवार, नातेदारी, विवाह, धर्म, शिक्षा एवं राज्य।

तृतीय इकाई- 06 घण्टे

संस्कृति एवं सभ्यता, सांस्कृतिक बहुलतावाद, बहुसंस्कृतिवाद एवं सांस्कृतिक सापेक्षवाद, संस्कृति की प्रमुख विशेषता: आत्मसातीकरण, पर-संस्कृतिग्रहण एवं एकीकरण,सामाजिक सांस्कृतिक प्रक्रियाएं प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष।

चतुर्थ इकाई- 06 घण्टे

सामाजिक संरचना, प्रस्थिति तथा भूमिका, सामाजिक प्रतिमान, जनरीतियां, लोकाचार, मूल्य, लोकाचार।

पंचम इकाई- 06 घण्टे

सामाजिक स्तरीकरण: अर्थ, रूप एवं आधारभूत तत्व,
सामाजिक गतिशीलता: अर्थ, रूप एवं आधारभूत तत्व। प्रयोगात्मक गतिविधियाँ

परिणाम- 1. समाज के उद्भव और विकास की अवधारणा से अवगत होगा।
2. प्रमुख सामाजिक अवधारणाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।
3. सामाजिक विकास में प्रमुख तत्त्वों एवं सिद्धान्तों के बारे में जानकारी मिलेगी।
4. समाज शास्त्रीय चिंतको की जानकारी प्राप्त होगी।
5. संस्कृति एवं सभ्यता के विश्लेषण का ज्ञान होगा।

BDPHID-304(3) संस्कृतसाहित्यम् - III

क्रेडिट:-02
घण्टें:-30

उद्देश्य-

- "सुपां सुपा भवन्ति" "बहुलं छन्दसि" आदि व्याकरण के वैदिक भाग का ज्ञान कराना।
- वेदों में प्रयुक्त होने वाले विशिष्ट प्रत्ययों का सामान्य दृगदर्शन कराना

प्रथम इकाई 08 घण्टे

व्याकरणनियमविषय: (अष्टाध्ययी 1-4)

द्वितीय इकाई- 07 घण्टे

व्याकरणनियमविषय: (अष्टाध्ययी 5-8)

तृतीय इकाई- 08 घण्टे

लिङ्गानुशासनं नाम पञ्चमं प्रकरणम्

चतुर्थ इकाई- 07 घण्टे

लिंगानुशासनशेष:

परिणाम-

1. वेद से सम्बद्ध व्याकरण के विशिष्ट नियमों से अवगत होकर वेदार्थ करने में सरलता अनुभव करता है।
2. वेद से सम्बद्ध विशिष्ट प्रत्ययों के अर्थ विषय में निर्भ्रान्त हो जाता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक - ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली 2012

व्याकरण चन्द्रोदय 3-डॉ. आचार्या साध्वी देवप्रिया, प्रकाशक-दिव्यप्रकाशन हरिद्वार।

BDPHAE-305 - सरल-मानक-संस्कृतम्

क्रेडिट:-02

घण्टें:-30

Course Objective:

The course will be able to,

Equip learners with the ability to engage in basic conversations in Sanskrit on everyday topics, such as greetings, introductions, and common social interactions.

Improve learners' ability to understand spoken Sanskrit in various conversational contexts.

Improve learners' ability to read, write and understand the basic Sanskrit writings.

इकाई प्रथम- भाषा परिचयः वाक्य रचना १ (6 घण्टे)

संस्कृतभाषापचियः, स्वपरिचयः, सामान्यपदपरिचयः (नामपदम्, क्रियापदम्) वर्तमानकालः (प्रथमपुरुष, एकवचनम्, बहुवचनम्, उत्तमपुरुष,द्विवचनम्) संख्या, भविष्यत्कालः, भूतकालः,कालपरिवर्तनम्, समयः, देहाङ्गानि

इकाई द्वितीय- वाक्यरचना २ (6 घण्टे)

लिङ्गभेदः, विभक्तिभेदः, विशेषणम्, अव्ययम्, बन्धुवाचकाः, दिनचर्या, प्रसङ्ग-वाचनम् (गुरुशिष्यसम्भाषणम्, मित्रसम्भाषणम् आदि)

इकाई तृतीय- कथा-वाचनम् (6 घण्टे)

सरलसंस्कृतकथानां वाचनम्

इकाई चतुर्थ- संस्कृतलेखनम् १ (6 घण्टे)

वेदवेदाङ्गानां महत्वम्, मुखं व्याकरणं स्मृतम्, उपनिषदां महत्वम्, भारतं पञ्चमो वेदः, पुराण लक्षणम् तेषां महत्वं च, संस्कृतभाषायाः महत्वम्, संस्कृतस्य रक्षार्थं प्रसारार्थं चोपायाः

इकाई पञ्चम- संस्कृतलेखनम् २ (6 घण्टे)

भारतीयदर्शनानां महत्वं वैशिष्ट्यं च, नास्ति सांख्यसमं ज्ञानम्, एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति, नास्ति योगसमं बलम्, ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या

निर्धारितग्रन्थाः

1. संस्कृतस्वाध्यायः-वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री, राष्ट्रिसंस्कृतसंस्थानम्, नई दिल्ली

सन्दर्भग्रन्थाः

1. वाक्यव्यवहारावलिः-श्रीमद्दयानन्दकन्यागुरुकुलम्, चोटीपुर
2. संस्कृतनिबन्धशतकम्, लेखक- डॉ0 कपिल द्विवेदी, प्रकाशन-विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

Course Outcomes:

After completing the course, students will be able to,

Hold simple dialogues, ask and answer questions, and respond appropriately in social settings using basic Sanskrit vocabulary and sentence structures.

Comprehend and interpret short spoken passages, identify key information, and follow along with basic conversations in Sanskrit.

Write on various topics in simple Sanskrit.

देवप्रिया

BDPHSE-306(1) सस्वर वेदपाठ

क्रेडिट:-03
घण्टें:-45

उद्देश्य-

- वेदों की रक्षा करना।
- वेद, वेदो का विषय और वेदों के ऋषियों से लाभान्वित् होगें।
- वेद पाठ के हर प्रकार के पाठों से अवगत् कराना।
- अक्षरों(वर्णो) उच्चारण का सम्यक बोध कराना।

ईकाई-१ (12 घण्टे)

i. वैदिक वाङ्मय परिचय
ii. वेदो के ऋषियों, छन्द एवं देवताओं के स्वरूप का परिचय।
iii. वेदों के मुख्य विषयों का परिचय।
iv. वेद पाठ के आठ प्रकार के पाठों (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ, घन)से अवगत कराना।
v. मुख्य सूक्तों का परिचय (अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी, बृहस्पति, स्वस्तिवाचन, पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, शान्तिकरण श्रद्धा, संगठन एवं दिनचर्या मन्त्रों का सस्वर उच्चारण)

ईकाई-२ (8 घण्टे)

i. ऋग्वेदीय अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

ईकाई-३ (8 घण्टे)

i. पुरुष सुक्त नासदीय सूक्त, बृहस्पति सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

ईकाई-४ (12 घण्टे)

i. कृष्ण युजर्वेदीय तैत्तीरीय आरण्यक मंत्रपुष्पम् का परिचय।
ii. मन्त्रपुष्पम् का पाठ एवं कण्ठस्थ अर्थ सहित व्याख्या।
iii. स्वस्तिवाचन शांतिकरण एवं दिनचर्यामंत्रो का सस्वर उच्चारण।
iv. संगठन सूक्त के प्रतिदिन एक-एक मंत्र का अर्थ बोध।

ईकाई-५ (5 घण्टे)

i. व्याकरण नियम विषय: (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका) प्रकरण-55।

परिणाम-

- वेद पाठ के प्रकारों (पाठों) का बोध होगा।
- अग्नि,वायु, सस्वर, पाठ एवं अर्थ बोध होगा।
- वैदिक वाङ्मय के विषय मे ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- एकाग्रता बढ़ती है, सात्विक हारमोन्स पैदा होने से अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय एवं आनन्दमय अस्तित्व पुष्ट और प्रसन्न होता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदामृत, डॉ. साध्वी देवप्रिया, दिव्य प्रकाशन, हरिद्वार।

सहायक पाठ्यपुस्तक- वैदिक सुक्त मञ्जरी, मुद्रक-ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स, ज्वालापुर हरिद्वार।

देवप्रिया

BDPHSE-306(2) Advance Knowledge of Vocal & Instrumental Credit-03

Objective- Hours:-45

- Understand the fundamental concepts of music, including its origins, methods, types, and forms
- Explore the nature of sound, its origin, and the elements of music such as notes, pitches, and rhythm.Learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics.Gain knowledge of basic musical notes, scales, and octaves.Practice to Sing five Bhajans.
- Understand the concept of Raag, its rules, classifications, and basic characteristics.Identify the ten Thaats and learn about their significance in Raag classification.Recognize three Raags belonging to each of the ten Thaats.
- Study the lives and contributions of prominent musicians.

Unit I- Basic Theory of Primary Raag (Yaman and Bhairav), Writing Skills of Chota khayal in Teentaal in Raag Yaman, Importance of Taal in Music, Labeled Diagram of Tabla, Biography & Role in Tabla – Pt.Kishan Maharaj, Labeled Diagram of Tanpura, its role & Significance in music. **(15 Hours)**

Unit II- Writing skill of one kaydas & One paltas each in Thah Laya in teentaal, Two Yog Geet .

(10 Hours)

Unit III- Practice of one Chota Khayal (Bandish) in Teentaal madhya laya with two Taan, Stage /Class Performance of One(Bhajan,Patriotic Song & Ghajal).

(10 Hours)

Unit IV- **Tabla**:- Bhajan Playing pattern on Tabla, One Palta in Teentaal. Ability to play Teentaal on Lehra . **(10 Hours)**

Harmonium : Playing Skill of **Aroh Avroh Pakad** in Following Raag (Bhopali, Malkaush,Bhairavi), Practice of One (bhajan, Motivational Song), playing skill of Alankar 1 to 10 (According to kramik pustak malika-1)

Outcomes-

- Students will know what music is, where it comes from, and the different types it can have.
- Students will understand how sound works and learn about notes, pitches, and how they change in music.They will learn about concepts like Shruti, Swar, Andolan, Laya, and Taal, including their types and characteristics.Students will acquire knowledge of basic musical notes, scales, and octaves, and practice singing five Bhajans.
- Students will learn about Raag, its rules, and different types, helping them appreciate Indian classical music better.
- Students will discover the lives of famous musician and understand their importance in music history.

Recommended Books:-

1. Sangeet Rachna Ratnakar Part – 1- Rajkishor Prasad Sinha (Author)
2. Raag parichaya Part – 1 to 4 – Harishchandra Srivastava (Author)
3. Sangeet Prasnottar Part – 1
4. Taal Parichaya – All parts – Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
5. Adarsh Table Prashnotari Part – 1 – Dr. Rubi Shrivastava
6. Sangeet Praveshika – Acharya Girish Chandra Shrivastava (Author)
7. Kramik Pushtak Mallika Part – All Parts – V.N. Bhatkhande
8. Bhartiya Sangeet Itihas – Umesh & Jaydev Joshi
9. Sangeet Vadya - Ragmani

BDPHSE-306(3) यज्ञविज्ञानम्

क्रेडिट:-03
घण्टें:-45

उद्देश्य:-

- यज्ञ के स्वरूप एवं उसके ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत कराना।
- यज्ञ के व्यावहारिक, वैज्ञानिक एवं परमार्थिक पक्षों का ज्ञान कराना।
- यज्ञ के महत्व का बोध कराना।

इकाई 1- यज्ञ शब्द का परिचय (निर्वचन व परिभाषा) यज्ञ का इतिहास, शास्त्रीय प्रमाण व महत्वादि। (9 घण्टें)

इकाई 2-यज्ञ के प्रकार, पंचमहायज्ञों का परिचय-देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञादि के मंत्रो। की व्याख्या यज्ञ सामग्री, समिधा आदि का परिचय। (9 घण्टें)

इकाई 3- शास्त्रों में वर्णित यज्ञ के अन्य प्रकार व महत्व, यज्ञ का व्यवहारिक पक्ष। (9 घण्टें)

इकाई 4- यज्ञ का वैज्ञानिक विश्लेषण, यज्ञचिकित्सा शोध कार्य ग्लोबल वार्मिंग समस्या का समाधान। (9 घण्टें)

इकाई 5- यज्ञ का रोगों पर प्रभाव, यज्ञ एवं योग का प्रभाव। (9 घण्टें)

परिणाम:-

- यज्ञ से सामान्य रूप से रोगों के निदान में समर्थता प्राप्त होगी।
- यज्ञ एवं योग को समग्र चिकित्सा के रूप में उपयोग एवं विनियोग करने में कुशल होगें।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-:श्रौत यज्ञों का संक्षिप्त परिचय। लेखक-पं. युधिष्ठिर मीमांसक

यज्ञ योग आयुर्वेद चिकित्सा। लेखक-प.पू.स्वामी रामदेव जी महाराज प्रकाशन-दिव्ययोग प्रकाशन हरिद्वार।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम - B.A. द्वितीय वर्ष

Semester -IV

क्रेडिट:-06
घण्टें:-90

BDPHMJ-401 वैशेषिक दर्शन पूर्वार्द्ध

उद्देश्य-
1. वैशेषिक दर्शन के सूत्रों का स्मरण करवाना।
2. वैशेषिक दर्शन के अर्थ से अवगत कराना।
3. द्रव्यादि षट् पदार्थों के उद्देश्य एवं लक्षण से अवगत कराना।
4. नौ द्रव्यों एवं पांच कर्मों का विस्तृत ज्ञान प्रदान कराना।

प्रथम इकाई - प्रथम अध्याय-धर्म लक्षण और द्रव्य, गुण, कर्म, उद्देश्य, लक्षण प्रकरण साधर्म्यवैधर्म्य प्रकरण परसामान्य अपरसामान्य निरुपण (20 घण्टे)

द्वितीय इकाई - द्वितीय एवं तृतीय अध्याय - पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, (पंचमहाभूत) द्रव्य परीक्षा प्रकरण। काल, दिशा, परीक्षा प्रकरण, शब्द नित्यतत्वा प्रकरण हेतु एवं हेत्वाभास लक्षण निरुपण। (20 घण्टे)

तृतीय इकाई - चतुर्थ अध्याय - मन, आत्मा, परीक्षा प्रकरण, परमाणुकारणातावाद, कारण कार्य सिद्धान्त। (20 घण्टे)

चतुर्थ इकाई - पंचम अध्याय - उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण, गमन, कर्म निरूपण। (20 घण्टे)

पंचम इकाई - उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखन। (10 घण्टे)

परिणाम-
1. वैशेषिक दर्शन के सूत्रों को शुद्धतापूर्वक स्मरण करके वाचन में विद्यार्थी समर्थ हो जाता है।
2. प्रथम पांचों अध्यायों के सूत्रों के अर्थ एवं व्याख्यान करने में दक्ष हो जाता है।
3. द्रव्यादि षट् पदार्थों का सामान्यज्ञान एवं नौ द्रव्यों तथा पांच कर्मों का विशेष ज्ञान अर्जित कर लेता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक:- वैशेषिक दर्शन- आचार्य उदयवीरशास्त्री, प्रकाशक-गोविन्दराम हासानन्द,
वैशेषिक दर्शन-आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक-आर्श-शोध-संस्थान अलियाबाद।
वैशेषिक दर्शन- डॉ.साध्वी देवप्रिया,प्रकाशक-दिव्यप्रकाशन, हरिद्वार।

BDPHMJ-402 सांख्यदर्शनम् पूर्वार्ध

क्रेडिट:-05
घण्टें:-75

उद्देश्य:-

- सांख्य का ऐतिहासिक परिचय कराना।
- सांख्य से सम्बन्धित साहित्य - सांख्यकारिका, तत्वसमास से अवगत कराना।
- प्रथम तीन अध्यायों (तन्त्राध्याय, प्रधानकार्याध्याय व वैराग्याध्याय)के सूत्रार्थ एवं भावार्थ का बोध कराना।

सांख्यसूत्र- (1-3 अध्याय)

इकाई प्रथम- प्रथम अध्याय (तंन्त्राध्याय) का सूत्रार्थ एवं भावार्थ (15 घण्टे)

इकाई द्वितीय- द्वितीय अध्याय (प्रधानकार्याध्याय) का सूत्रार्थ एवं भावार्थ (20 घण्टे)

इकाई तृतीय- तृतीय अध्याय, (वैराग्याध्याय) का पूर्वार्द्ध सूत्रार्थ एवं भावार्थ (20 घण्टे)

इकाई चतुर्थ- तृतीय अध्याय, (वैराग्याध्याय) उत्तरार्द्ध का सूत्रार्थ एवं भावार्थ (20 घण्टे)

परिणाम:-

- सांख्य से सम्बन्धित ग्रन्थ-सांख्यकारिका, तत्वसमास से परिचित हो जाता है।
- सांख्यसूत्रों के सूत्रार्थ एवं भावार्थ के साथ-साथ उसके ऐतिहासिक एवं पौराणिक तथ्यों से भी अवगत हो जाता है।
- सांख्य के समग्र सिद्धान्तों का विश्लेषण करने में सक्षम हो जाता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन (आचार्य उदयवीर शास्त्री), प्रकाशक-विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006 एवं सांख्यदर्शनम्- दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार। सहायक ग्रन्थ- सांख्यदर्शनम्, आचार्य आनन्दप्रकाश, आर्ष शोध संस्थान, अलियाबाद।

BDPHMJ-403 साङ्ख्यदर्शनम् उत्तरार्द्ध क्रेडिटः-05

उद्देश्यः- घण्टेंः-75

- सांख्यदर्शन के आख्यायिकाध्याय के सूत्रार्थ एवं भावार्थ से अवगत कराना।
- सांख्यदर्शन के परपक्षनिर्जयाध्याय के सूत्रार्थ एवं भावार्थ से अवगत कराना।
- सांख्यदर्शन के तन्त्राध्याय के सूत्रार्थ एवं भावार्थ से अवगत कराना।

इकाई-1 चतुर्थ अध्याय (आख्यायिकाध्याय) का सूत्रार्थ एवं भावार्थ (20 घण्टे)

इकाई-2 पंचम अध्याय (परपक्षनिर्जयाध्याय) का सूत्रार्थ एवं भावार्थ (20 घण्टे)

इकाई-3 षष्ठ अध्याय (तन्त्राध्याय) का सूत्रार्थ एवं भावार्थ (20 घण्टे)

इकाई-4 सांख्यदर्शन का महत्व, सांख्यज्ञान का अन्यों शास्त्रों पर प्रभाव, सांख्य एवं वेदान्त में समानता (15 घण्टे)

परिणामः-

- उपर्युक्त अध्यायों के सूत्रार्थ एवं भावार्थ का विश्लेषण करने में समर्थ हो जाता है।
- सांख्यसिद्धान्तों के विस्तृत एवं प्रामाणिक ज्ञान कौशल को प्राप्त कर लेता है।
- विभिन्न सिद्धान्तों के तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक विश्लेषण में कुशल हो जाता है।

निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ - सांख्यदर्शनम्, दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

सहायक ग्रन्थ - सांख्यदर्शन- आचार्य उदयवीर शास्त्री।

प्रकाशक-विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006

सांख्यदर्शन का इतिहास-आचार्य उदयवीर शास्त्री,

प्रकाशक-विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006

सांख्य सिद्धान्त-आचार्य उदयवीर शास्त्री,

प्रकाशक-विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006

BDPHMN-404 संस्कृतव्याकरण

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

उद्देश्य-:

- कृत प्रत्ययों का परिचय कराना।
- उणादि प्रत्ययों का परिचय कराना।
- कृतादि प्रत्ययों का प्रयोगात्मक ज्ञान।

प्रथम इकाई - कृत् प्रत्यय प्रकरणम् १, कृत्य-प्रक्रिया, कृत्य-प्रत्ययों का प्रयोग, प्रमुख धातुओं के तव्य प्रत्ययान्त रूप, अनीय, कर्तृ-वाचक-कृत्, सोमपद कृर्त, मूलविभुजादि। 10 घण्टे

द्वितीय इकाई - कृत् प्रत्यय प्रकरणम् २, निष्ठा-प्रत्यय-क्त, क्तवतु, निष्ठाप्रत्यय-सम्बन्धी विशेष कार्य निष्ठा-प्रत्यय के प्रयोग का विषय क्तान्त रूपावलि,शतृ-शानचपदी, ताच्छीलिक कृत प्रत्यय, तुमुन् (तुम) तुमुन्नन्त रूपावलि। 30 घण्टे

तृतीय इकाई - भाव-वाचक तथा कर्तृ-भिन्न कारक-वाचक कृत, स्त्र्यधिकारोक्तकृत-प्रत्यय, खल्, क्त्वा-ल्यप्, क्त्वा-सम्बन्धी विशेष कार्य, ल्यप्-सम्बन्धी विशेष कार्य, क्त्वान्त-ल्यवन्त रूपावलि णमुल् (=अम्) 10 घण्टे

चतुर्थ इकाई - उत्सर्गापवाद की बाध्य-बाधक-भावव्यवस्था, उणादि प्रत्यय, अथ प्रथम: पाद:, अथ द्वितीय: पाद:, अथ तृतीय: पाद:, अथ चतुर्थ: पाद:, अथ पञ्चम: पाद:। 10 घण्टे

परिणाम-

- कृत प्रत्ययों का बोध ।
- उणादि प्रत्ययों का विशिष्ट बोध।
- कृतादि प्रत्ययों का प्रयोगात्मक अवबोध।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक:- व्याकरण चन्द्रोदय-5, डॉ. आचार्या साध्वी देवप्रिया, प्रकाशन-दिव्य प्रकाशन हरिद्वार।

देवप्रिया

BDPHAE-405 (1) Communication Technology

Credit:-02
Hours:-30

Objectives

The course helps the participants to,

- Understand the concept and purpose of Communication Technology
- Communicate with email by their own
- Join and organize online academic events
- Search the contents through Google and so
- Access various E-Resources to develop intelligence

Unit I	Introduction to Communication technology Definition, Types, Purpose and Input methods for Indian Languages/Scripts	(6 hours)
Unit II	E-mail Communication G-mail and Zimbra – How to create and use	(6 hours)
Unit III	Web Conference and Tools Google Meet, Google Classroom, Zoom – including live streaming	(6 hours)
Unit IV	Internet Search Google, YouTube, Blog	(6 hours)
Unit V	E-Resources E-Dictionaries, E-Books, E-Learning, Wiki for Indian Languages	(6 hours)

Outcomes

After completing the course, the learners will be able to

- Type Indian Script/s by using various Input methods
- Send and arrange emails
- Schedule and/or Join web conferences
- Search the contents through Google and so
- Access various E-Resources

Reference Book:

Course on Computer Concepts (CCC), Prof. Satish Jain & M. Geeta,
Rapidex Computer Course, Unicorn Books Pvt. Ltd

BDPHAE-405(2) Introduction to Journalism and Mass Communication Objectives

Credit:-02
Hours:-30

Course Objectives

- To introduce students to the concepts, processes, and importance of journalism and mass communication.
- To explore the historical evolution and functions of media in society.
- To familiarize students with communication models and theories.
- To develop an understanding of media ethics and laws.
- To provide practical insights into basic content creation for media platforms.

Course Outcomes (COs)

By the end of this course, students will be able to:

- CO1: Describe the basic concepts and processes of communication.
- CO2: Identify the historical development and role of journalism in society.
- CO3: Analyse various models and theories of communication.
- CO4: Examine the ethical and legal frameworks of media practices.
- CO5: Demonstrate basic skills in content creation and media platform usage.

Unit	Course Outline	CO Mapping	Bloom's Taxonomy Level
1	**Basics of Communication (6 Hours)** : Definition, Elements, and Process of Communication; Ancient Indian concept of communication –oral tradition, use of cave art, bhoja-patras, rock edicts and pillars for communication, samvad, story-telling, folk, drama, art of communication in Natyashastra, sadharanikaran. Types of Communication: Intrapersonal, Interpersonal, Group, Mass Communication; Functions of Communication: Informing, Persuading, Entertaining; Barriers to Communication	CO1,CO3	K1, K4
2	**Introduction to Journalism (6 Hours):** Definition, Scope, and Importance of Journalism; Historical Overview of Journalism in India; Principles of Journalism: Accuracy, Objectivity, Fairness; Role of Journalism in Democracy	CO2	K2
3	**Mass Communication (6 Hours):** Definition and Characteristics of Mass Media; Types of Mass Media: Print, Broadcast, Digital; Media Convergence and New Media Technologies; Social, Cultural, and Political Impact of Media	CO2,CO3	K2, K4
4	**Media Ethics and Laws (6 Hours):** Introduction to Media Laws: Defamation, Copyright, Contempt of Court; Ethical Challenges in Journalism and Media; Freedom of Press in India; Media Literacy and Responsible Journalism	CO4	K3, K5
5	**Hands-on Learning Insights (6 Hours):** Basics of News Writing: 5Ws and 1H; Crafting Headlines and Leads; Introduction to Digital Media Platforms: Blogging, Podcasting, Social Media; Group Discussions on Emerging Media Trends	CO5	K3, K6

Bloom's Taxonomy Level: K1-Remember, K2- Understand, K3- Applying, K4- Analyze, K5- Evaluate, K6-Create

Assignments:

Assignment 1: Write a report on the role of journalism in democracy, with examples from Indian and global media practices. (500 words)

Assignment 2: Create a blog post on an emerging trend in digital media, such as podcasting or citizen journalism. (500 words)

Suggestive Readings:

- Baran, S. J. (2020). Introduction to Mass Communication: Media Literacy and Culture (10th ed.). McGraw-Hill Education.
- Dominick, J. R. (2012). The Dynamics of Mass Communication: Media in the Digital Age (12th ed.). McGraw-Hill.
- Kumar, K. J. (2020). Mass Communication in India (5th ed.). Jaico Publishing House.
- McQuail, D. (2010). McQuail's Mass Communication Theory (6th ed.). Sage Publications.
- Natarajan, J. (1955). History of Indian Journalism. Publications Division, Ministry of Information and Broadcasting, India.
- Ravindran, R. K. (1999). Handbook of Radio, Television, and Broadcast Journalism. Anmol Publications.
- पांडे, स. के. (2018). जनसंचार और पत्रकारिता का परिचय. वाराणसी: भारतीय विद्या भवन पब्लिकेशन।
- गुप्ता, एस. (2020). जनसंचार माध्यम और सिद्धांत. दिल्ली: समीर प्रकाशन।
- शर्मा, विकास. (2019). पत्रकारिता के सिद्धांत और व्यवहार. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- त्रिपाठी, राकेश कुमार. (2016). समाचार लेखन और संपादन. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- प्रसाद, महेंद्र (2015). भारतीय पत्रकारिता का इतिहास. पटना: प्राची प्रकाशन।
- मिश्रा, उमेश. (2021). जनसंचार माध्यमों की भूमिका. भोपाल: साहित्य प्रकाशन।
- द्विवेदी, रामेश्वर. (2017). पत्रकारिता और लोकतंत्र. लखनऊ: लोकोदय प्रकाशन।

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम - B.A. दर्शन तृतीय वर्ष

Semester-V

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

BDPHMJ-501-वेदान्त दर्शन पूर्वार्द्ध

उद्देश्य

- ब्रह्म की उपासना विविध अध्यात्म ग्रन्थों में वर्णित परिचय कराना।
- ब्रह्म जगत् एवं जीवात्मा के प्रति निमित्त कारणत्व सिद्ध कराना।
- वेदाध्ययन में मनुष्य मात्र का अधिकार एवं जगत् उत्पत्ति में प्रकृति का उपादान कारणत्व सिद्ध कराना।
- ब्रह्म जगत् एवं जीवात्मा के स्वरूप का बोध करना।

इकाई प्रथम (15 घण्टें)

(प्रथम अध्याय का प्रथम एवं द्वितीय पाद) जगत् के प्रति ब्रह्म का निमित्त कारणत्व, ब्रह्म का निमित्त कारणत्व, ब्रह्म के विभिन्न नाम, विभिन्न अध्यात्म ग्रन्थों में ब्रह्म का उपास्यत्व, वैश्वानर आत्मा, ब्रह्म का द्यौ-भू आदि का आयतनत्व, वेदाध्ययन में मनुष्य मात्र का अधिकार।

इकाई द्वितीय (15 घण्टें)

(प्रथम अध्याय का तृतीय एवं चतुर्थ पाद)जगदोत्पत्ति में प्रकृति का उपादान कारणत्व एवं ब्रह्म का निमित्त कारणत्व। स्वतन्त्र प्रकृति कारणवाद का निराकरण क्षणिकवाद आदि मतों का खण्डन, जीवात्मा का अनुत्पत्ति धर्मत्व एवं कर्तृत्व निरूपण।

इकाई तृतीय (15 घण्टें)

(द्वितीय अध्याय का प्रथम एवं द्वितीय पाद) स्मृति ग्रन्थों में प्रतिपादित उभयकारणवाद का समन्वय, स्वतन्त्रप्रकृतिकारणवाद का निराकरण, परमाणुवाद आदि मतों का निराकरण।

इकाई चतुर्थ (15 घण्टें)

(द्वितीय अध्याय का तृतीय एवं चतुर्थ पाद अध्याय) आकाशादि भूतों की उत्पति एवं लय, जीवात्मा का नित्यत्व, अणुत्व एवं भोक्तृत्व धर्म, प्राणों की उत्पत्ति एवं स्वरूप। मुख्य प्राण का इन्द्रियों से भिन्नत्व।

परिणाम

- ब्रह्म उपासना की विविध विधियों का परिचय।
- ब्रह्म के जगत के प्रति निमित कारण बताना।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक - ब्रह्मसूत्र, आचार्य उदयवीर शास्त्री।

प्रकाशक-विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006

एवं ब्रह्मसूत्रम्, दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

BDPHMJ-502 वेदान्त दर्शन उत्तरार्ध

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

उद्देश्य

- वेदान्तदर्शन के साधनाध्याय व फलाध्याय के सूत्रार्थो से परिचय कराना।
- उपरोक्त अध्यायगत सूत्रों को कण्ठस्थ कराना।
- ब्रह्म की उपासना का वैदिक स्वरूप परिचय।

इकाई प्रथम

(तृतीय अध्याय का प्रथम एवं द्वितीय पाद) सूक्ष्म शरीर के साथ जीवात्मा का संरक्षण, परमात्मा का स्वरूप, जीवात्मा तथा परमात्मा का परस्पर सम्बन्ध परमात्मा का उपास्यत्व। 15 घण्टें

इकाई द्वितीय

(तृतीय अध्याय का तृतीय एवं चतुर्थ पाद) जीवात्मा के साथ सूक्ष्म शरीर एवं प्राणादि का उत्क्रमण ब्रह्म उपासक का ब्रह्मलोक गमन, मुक्ति मे जीवात्मा की स्थिति। 15 घण्टें

इकाई तृतीय

(चतुर्थ अध्याय का प्रथम एवं द्वितीय पाद) परमात्मा के जागृत आदि अवस्था का प्रतिषेध परमात्मा का कर्मफ प्रदातृत्व। 15 घण्टें

इकाई चतुर्थ

(चतुर्थ अध्याय का तृतीय एवं चतुर्थ पाद अध्याय) जीवात्मा के उत्पक्रमण काल में वांगादि इन्द्रियों के लीनत्व मुक्तात्मा का शरीर से उत्क्रमण, देवत्व मार्ग का निरूपण एवं मुक्तात्मा का ऐश्वर्य। 15 घण्टें

परिणाम

- वेदान्तदर्शन के साधन-साध्य का परिचय कराना।
- जीवात्मा के साथ सूक्ष्म शरीर का परिचय कराना।
- परमात्मा के जागृत आदि अवस्थाओं का विवरण देना।
- देवत्व मार्ग का निरूपण।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक - ब्रह्मसूत्र, आचार्य उदयवीर शास्त्री।

प्रकाशक-विजयकुमार, गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली- 110006

एवं ब्रह्मसूत्रम्, दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

BDPHMJ-503 तर्कसंग्रह एवं वैशेषिक दर्शन उत्तरार्ध

क्रेडिट:-04

घण्टें:-60

उद्देश्य- 1. तर्कसंग्रह के सप्तपदार्थों का परिचय कराना।
2. वैशेषिक के छठे अध्याय से दसवें अध्याय तक के सूत्रों के सूत्रार्थ एवं भावार्थ से अवगत कराना।
3. वैदिक कर्मों एवं चौबीस गुणों का विस्तृत ज्ञान कराना

प्रथम इकाई - तर्कसंग्रह के प्रमाण विमर्श, सप्त पदार्थों का विस्तृत वर्णन। 20 घण्टे

द्वितीय इकाई - सप्तम अध्याय - रूप, रस, गन्ध, स्पर्श गुण परीक्षा प्रकरण संख्या परिमाण परीक्षा प्रकरण। प्रत्कत्वा, संयोग, विभाग, परत्व और अपरत्व परीक्षा प्रकरण। 20 घण्टे

तृतीय इकाई - अष्टम, नवम एवं दशम् अध्याय-प्रत्यक्षात्मक ज्ञान परीक्षा प्रकरण, अनुमित्यात्मक ज्ञान परीक्षा प्रकरण, अभाव परीक्षा प्रकरण, सुख, दुख परीक्षा प्रकरण। 20 घण्टे

चतुर्थ इकाई - उपर्युक्त ग्रन्थों का स्मरण व लेखन। 10 घण्टे

परिणाम- 1. वैशेषिक दर्शन के अंतिम पांच अध्यायों के सूत्रार्थ एवं भावार्थ करने में समर्थ हो जाता है।
2. वैशेषिक दर्शन के वैदिक कर्मों एवं चौबीस गुणों का विस्तृत ज्ञान अर्जित कर लेता है।
3. तर्कसंग्रह के सप्त पदार्थों का विशेषज्ञान से युक्त हो जाता है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तकः- वैशेषिक दर्शन- आचार्य उदयवीरशास्त्री, प्रकाशक-गोविन्दराम हासानन्द
वैशेषिक दर्शन-आचार्य आनन्दप्रकाश, प्रकाशक-आर्ष-शोध-संस्थान अलियाबाद
वैशेषिक दर्शन- डॉ.साध्वी देवप्रिया,प्रकाशक-दिव्यप्रकाशन, हरिद्वार।
तर्कसंग्रह - गोविन्दाचार्य चौखम्बा सूरभारती प्रकाशन, वाराणासी।

BDPHMN-504 वैदिक साहित्य - I

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

उद्देश्य-

- मुण्डकोपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, ऐतरीयोपनिषद्, माण्डुक्योपनिषद् व प्रश्नोपनिषद् के प्रसिद्ध प्रकरणों से अवगत कराना।
- उपरोक्त उपनिषदों के सृष्टि-प्रकरण, उत्तरायण-दक्षिणायन मार्ग, षोडश कलाओं वाला पुरुष, परा-अपरा विद्या, ओंमकार की व्याख्या, गर्भ का वर्णन इत्यादि प्रकरणों का प्रामाणिक ज्ञान कराना।

प्रथम इकाई- प्रश्नोपनिषद् - सृष्टिउत्पत्ति प्रकरण, तप-ब्रह्मचर्य-श्रद्धा, रयि-प्राण, उत्तरायणन-दक्षिणायन मार्ग, इन्द्रियविवाद प्रकरण, पंचप्राण विवरण, सोलह कलाओं का पुरुष। 12 घण्टे

द्वितीय इकाई- मुण्डकोपनिषद् - ब्रह्मविद्या, परा-अपरा विद्या, इष्टापूर्त कर्म, विराट पुरुष, प्रणव धनु, ह्रदयगांठ का भेदन, सत्यमेव जयते, आत्मा प्राप्ति उपाय। 12 घण्टे

तृतीय इकाई- माण्डुक्योपनिषद् - जाग्रतस्वप्नसुषुप्ति का वर्णन, ओंमकार की व्याख्या। 12 घण्टे

चतुर्थ इकाई- तैत्तरीयोपनिषद् - शिक्षावल्ली, ब्रह्मनंदवल्ली, भृगुवल्ली 12 घण्टे

पंचम इकाई- ऐतरीयोउपनिषद् - सृष्टि की रचना, गर्भ का वर्णन 12 घण्टे

परिणाम-

- उपरोक्त पांचों उपनिषदों के सृष्टि प्रकरण, जीवात्मा की अर्ध्वगति, पञ्चप्राण, परा-अपरा विद्या, जागृत-स्वप्न-सुषुप्ति प्रकरण, आनन्द मीमांसा, इष्टापूर्त कर्म इत्यादि विषयक प्रकरणों का प्रामाणिक बोधपूर्वक विस्तृत व्याख्यान कौशल से युक्त हो जाता है।

निर्धारित पाठ्य पुस्तक- एकादशोपनिषद, डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार जी, प्रकाशक - विजयकृष्ण लखनपाल-डब्ल्यू-77 ए, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-48

सहायक ग्रन्थ - उपनिषद् रहस्य - पण्डित भीमसेन शर्मा

BDPHMN-505 योग आयुर्वेद प्राकृतिक चिकित्सा प्रशिक्षण

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

उद्देश्य :

- भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धति के समन्वित् स्वरूप का बोध कराना ।
- समन्वित चिकित्सा पद्धति के व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगो का निदान।
- योग, आयुर्वेद, पञ्चकर्म, षट्कर्म, नेचुरोपैथी, आहार चिकित्सा, यज्ञचिकित्सा, एक्यूपंचर, एक्यूप्रेशर एवं फिजियो थैरेपी जैसे समन्वित् भारतीय पुरातन चिकित्सा पद्धतियों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक बोध द्वारा योग्य एवं प्रशिक्षित व्यक्तित्व का निर्माण करना।

प्रथम इकाई- पञ्चकर्म- परिचय, प्रकार एवं विभिन्न रोगों में उपचार (15 घण्टें)

1) वमन
2) विरेचन
3) नस्य
4) बस्ति
5) रक्तमोक्षण

अभ्यंग, शिरोधारा, आंतरिक बस्ति, बाह्य बस्ति, अक्षितर्पण, नस्य, रक्तमोक्षण श्रृंगी, वातमोक्षण, स्नेहन, स्वेदन।

द्वितीय इकाई- षट्कर्म-परिचय, प्रकार एवं विभिन्न रोगों में उपचार (15 घण्टें)

1) जलनेति
2) रबड़नेति
3) कुंजल क्रिया
4) त्राटक
5) शंखप्रक्षालन

तृतीय इकाई- एक्यूप्रेशर (15 घण्टें)

1) परिचय, रोगानुसार, चिकित्सीय लाभ
2) हस्त एवं पैर के विभिन्न मर्म स्थानों के द्वारा चिकित्सा

चतुर्थ इकाई- प्राकृतिक चिकित्सा-सामान्य परिचय एवं रोगानुसार चिकित्सीय लाभ (15 घण्टें)

1) मिट्टी चिकित्सा
2) जल चिकित्सा
3) सूर्य चिकित्सा
4) आहार चिकित्सा
5) आकाश चिकित्सा (उपवास)
6) प्राण चिकित्सा (वायु)

परिणाम :

- समन्वित चिकित्सा पद्धति में प्रशिक्षित विद्यार्थी समाज में साध्य-असाध्य रोगों से पीडित रोगियों को उपचार देकर उन्हें सम्पूर्ण आरोग्य का लाभ प्रदान करता है एवं भारतीय पुरातन चिकित्सा व्यवस्था के प्रचार प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है ।
- सेवा निष्ठ आजीविका का आलम्बन लेकर स्वयं आत्मनिर्भर होता हुआ अन्यों को भी रोजगार परक सेवा क्षेत्र में नियोजित करता है, उपकार परख उपचार की एक स्वस्थ परम्परा का संवाहक बनकर समाज को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य के मार्ग पर अग्रसर करता है ।

पाठ्यपुस्तकम्- उपचार पद्धति, प्रकाशन- द्विव्य प्रकाशन, द्विव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार।

देवप्रिया

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

पाठ्यक्रम - B.A. दर्शन तृतीय वर्ष

Semester –VI

BDPHMJ-601 मीमांसा ज्योतिष्यपरिचयञ्च

उद्देश्य- 1. मीमांसा दर्शन का बोध।
2. मीमांसा दर्शन के आचार्यों का ज्ञान।
3. ज्योतिष्य का सामान्य परिचय कराना।
4. कुण्डली निर्माण इत्यादि का बोध कराना।

प्रथम इकाई- धर्मजिज्ञासाधिकरणम्, धर्मलक्षणाधिकरणम्, धर्मे प्रामाण्यपरीक्षाधिकरणम्, धर्मस्य प्रत्यक्षाद्यगम्यत्वाधिकरणम्, धर्मे चोदनाप्रामाण्याधिकरणम्, शब्दनित्यत्वाधिकरणम्, पदार्थमूलतया वाक्यार्थप्रामाण्याधिकारणम्, वेदाऽपौरुषेयत्वाधिकरणम् (15 घण्टें)

द्वितीयइकाई- ज्योतिष शास्त्र का परिचय ज्योतिष शास्त्र के भेद(सिद्धान्त, संहिता, होरा, वास्तु, रमल, प्रश्न, शकुन, ताजिकादि का परिचय), ज्योतिषशास्त्र के प्रमुख आचार्यों का परिचय, ज्योतिषशास्त्र का विकासक्रम, आर्यभट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, श्रीपति, भास्कर, कमलाकर, सामन्तचन्द्र शेखर आदि का परिचय, ज्योतिषशास्त्रीय प्रमुख कृतियां, सूर्यसिद्धान्त, पंचसिद्धान्तिका, बृहत्संहिता, सिद्धान्तशिरोमणि, बृहज्जातक आदि का परिचय । (15 घण्टें)

तृतीय इकाई- पंचांग परिचय -- तिथि,वार,नक्षत्र,योग,करण,अयन,गोल,पक्ष, ऋतु , मासादि का परिचय, कालमान विचार, नवविध कालमान ब्राह्म दिव्य गौरव प्राजापत्य सौर नाक्षत्र आदि कालमानों का परिचय, शक संवत् विचार । (15 घण्टें)
राशि परिचय राशि स्वरूप राशि स्वामी राशि स्वभाव राशि वर्ण राशि स्थान कालपुरूष विवेचन, ग्रह परिचय ग्रह स्वरूप उच्च नीच विचार मूलत्रिकोण आत्मादि विचार राजादि विचार, ग्रहबलविचार एवं मैत्री विचार, षड्बलविचार नैसर्गिक एवं तात्कालिक मित्रामित्र विचार पंचधा मैत्री विचार, (मित्र, सम, शत्रु आदि का विचार)

चतुर्थ इकाई- कुण्डली परिचय, कुण्डली का सामान्य परिचय द्वादश भाव विचार, भावकारक ग्रह विचार,भावों की केन्द्रादि संज्ञा विचार, विविध भावों से विचारणीय विषय ग्रहों से विचारणीय विषय, वर्ग परिचय षड्वर्ग सप्तवर्ग दशवर्ग षोडशवर्ग, दशा परिचय विंशोत्तरी दशा अष्टोत्तरी दशा, योगिनी दशा । (15 घण्टें)

परिणाम- 1. मीमांसा दर्शन के दार्शनिकों का परिचय।
2. मीमांसा दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का परिचय।
3. ज्योतिष्य का सामान्य परिचय।
4. कुण्डली निर्माण इत्यादि का बोध।

निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ- मीमांसा दर्शन-आचार्य उदयवीर शास्त्री प्रकाशकर विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली मुहर्तचिंतामणि, भारतीय ज्योतिष, भारतीय कुंडली विज्ञान, लघुजातमंकम्, जातककालंकार, जातकपारिजात, ताजिकनीकंठी, षट्पंचाशिका, जातकतत्वम्, सूर्यसिद्धान्त।

देवप्रिया

BDPHMJ-602 - भारतीय दर्शनों की मीमांसा एवं इतिहास

क्रेडिटः-04

घण्टें:-60

उद्देश्य-

- योग-सांख्य, न्याय-वैशेषिक, वेदान्त-मीमांसा तथा जैन बौद्ध दर्शनों के तत्वमीमांसा, ज्ञान मीमांसा तथा आचार मीमांसा से परिचित कराना।

प्रथम इकाई- दर्शन का अर्थ तथा उपयोग, भारतीय दर्शन की कतिपय विशेषताएं, भारतीय दर्शन का लक्ष्य, भारतीय दर्शनों का श्रेणी-विभाग, भारतीय दर्शनों का काल विभाग, भारतीय दर्शनों की पारस्परिक समानता। 10 घण्टे

द्वितीय इकाई- न्यायदर्शन-नामकरण, न्यायविद्या की उत्पत्ति, न्याय दर्शन के प्रसिद्ध आचार्य, प्रमाण मीमांसा, तत्व मीमांसा और आचार मीमांसा। वैशेषिक दर्शन-नामकरण, वैशेषिक दर्शन के आचार्य, वैशेषिक की प्राचीन व्याख्यायें, तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, कर्तव्य मीमांसा। 13 घण्टे

तृतीय इकाई- सांख्यदर्शन-परिचय, सांख्यदर्शन के प्रसिद्ध आचार्य, तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, कर्तव्य मीमांसा। योगदर्शन-परिचय, योगदर्शन के आचार्य, कर्त्तव्य मीमांसा, योग-मनोविज्ञान। 13 घण्टे

चतुर्थ इकाई- मीमांसा दर्शन-परिचय, मीमांसा का इतिहास, मीमांसा दर्शन के आचार्य, तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, आचार मीमांसा। वेदान्त दर्शन- परिचय, वेदान्त के प्रमुख आचार्य, वेदान्त का इतिहास, तत्व मीमांसा, आचार मीमांसा।

14 घण्टे

पंचम इकाई- जैन धर्म का उदय तथा विस्तार, जैन परमाण साहित्य, ज्ञान मीमांसा, तत्व समीक्षा, आचार मीमांसा, बौद्ध दर्शन -बुद्ध की आचार शिक्षा, त्रिरत्न, सत्य की मीमांसा, निर्वाण का स्वरूप, निष्कर्ष। 10 घण्टे

परिणाम-

- भारतीय दर्शन साहित्यों के इतिहास एवं महत्व को अधिगम कर लेता है।
- भारतीय दर्शनों के तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा एवं आचार मीमांसा का तुलनात्मक विश्लेषण करने में समर्थ हो जाता है।

निर्धारित पाठ्य पुस्तकः- भारतीय दर्शनशास्त्र का इतिहास आचार्य डॉ. जयदेव आर्य, न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन, नई दिल्ली

BDPHMJ-603 सांख्यकारिका

क्रेडिट:-06
घण्टें:-90

उद्देश्य- 1. सांख्यकारिका के मूल कारिकाओं के वाचन का बोध कराना।
2. सांख्यकारिका के लेखन का बोध कराना।
3. सांख्यकारिका के अर्थों का ज्ञान कराना।
4. सांख्य की मौलिक सिद्धान्तों का बोध कराना।

प्रथम इकाई- सांख्यप्रतिपादित ज्ञान की उपादेयता, वैदिक उपायों की अनुपादेयता, प्रमेयभूत पचीस तत्वों का परिचय, त्रिविध प्रमाण वर्णन, तीनों प्रमाणों का लक्षण, प्रमाणों का उपयोग, विद्यमान पदार्थों की उपलिब्ध में हेतु, प्रकृति और पुरुष की उपलब्धि में हेतु, सत्कार्यवाद की स्थापना, व्यक्त और अव्यक्त का वैधर्म्य, व्यक्त-अव्यक्त का साधर्म्य तथा पुरुष से वैधर्म्य, गुणों का स्वरूप-निरूपण, अविवेकित्वादि तथा प्रधान की सिद्धि, अवयक्त की कारणता में हेतुत्व-स्थापना, अवयक्त की प्रवृति के दो प्रकार। **(20 घण्टे)**

द्वितीय इकाई- पुरुष की सिद्धि, पुरुष बहुत त्ववाद, पुरुष में धर्म, पुरुष के कर्तृत्व का भ्रम, प्रकृति-पुरुष के संयोग में हेतु, सृष्टि का क्रम, बुद्धि के लक्षण और धर्म, अहंकार के लक्षण और उससे सर्ग की प्रवृत्ति, द्विविधा सृष्टि, इन्द्रिय विभाग, मन का इन्द्रियत्व और उसका लक्षण, इन्द्रियों की वृत्तियां, अन्त:करण की वृत्ति के दो प्रकार, वृत्तियों की क्रमिकता, पुरुषार्थ ही इन्द्रियों की प्रवृत्ति, करणों का लक्षण और उनका कार्य, बाह्य आभ्यन्तर रूप से उनका विभाग, बाह्येन्द्रियों के विषय करणों मे परस्पर गौण-प्रधानभाव, बुद्धि का प्राधान्य, बुद्धि की प्रधानता में हेतु।

(20 घण्टे)

तृतीय इकाई-विशेषों के तीन प्रकार, सूक्ष्म शरीर निरूपण, सूक्ष्मशरीर को स्थूल की अपेक्षा, सूक्ष्म का संसरण और नानारूपता, भावों के विभाग, निमित्त-नैमित्तिक प्रसंग से विविध गति, बुद्धिसर्ग निरूपण, विपर्यय के अवान्तर भेद, अशक्ति के 28 भेद, नवधा तुष्टि, आठ प्रकार की सिद्धि और उसके प्रतिरोध, द्विविध सर्ग का प्रयोजन, भौतिक सर्ग का निरूपण।

(20 घण्टे)

चतुर्थ इकाई-सात्विकादि सृष्टियाँ, दु:ख का कारण, पुरुषार्थ प्रकृति सर्ग, जड़ प्रधान की प्रवृत्ति में उदाहरण, पुरुष के मोक्ष के लिए प्रकृति की प्रवृत्ति, प्रकृति की स्वयं निवृत्ति, प्रकृति का नि:स्वार्थ साधन, प्रकृति की सुकुमारता, बन्ध-मोक्ष प्रकृति के होते है पुरुष के नही, प्रकृति के बन्ध-मोक्ष में हेतु, तत्वाभ्यास से ज्ञानोदय, ज्ञान से वास्तविक स्वरूप दर्शन, प्रकृति साक्षात्कार से सर्ग निवृत्ति, सम्यक् ज्ञान से जीवन मुक्ति, प्रधान के निवृत्त होने पर पुरुष को कैवल्य प्राप्ति, फलस्तुति।

(20 घण्टे)

पंचम इकाई- तत्वसमास सूत्रों का परिचय **(10 घण्टे)**

परिणाम- 1. सांख्यकारिका के मूल कारिकाओं के वाचन में समर्थ हो जाता है।
2. सांख्यकारिका के मूल कारिकाओं के लेखन में छात्र कुशल बन जाता है।
3. सांख्यकारिका के अर्थों से पूर्ण परिचय हो जाता है।
4. सांख्य के मौखिक सिद्धान्तों से पूर्णरूपेण परिचित हो जाता है।
सम्पूर्ण सांख्यकारिका

सन्दर्भग्रन्थ - सांख्यकारिका (श्रीमदीश्वरकृष्णविरचिता), तत्वसमास

BDPHMN-604 बुद्धचरितम्

क्रेडिट:-04
घण्टें:-60

उद्देश्य-

- गौतम बुद्ध के ज्ञानमय व शांतिमय जीवन से छात्र को तदनुकूल आचरण के लिए प्रेरित करना।
- बुद्धचरितम् के बोधिसत्व, प्रतीत्य समुत्पाद, वैराग्य, धर्मोपदेश, धर्मप्रचार इत्यादि प्रसंगों का उत्तम रीति से अध्ययन कराना।

प्रथम इकाई (12 घण्टें)

द्वादश सर्ग - त्रयोदश सर्ग

अराड दर्शन, बोधिसत्व चिन्तन, सांख्य दर्शन।

द्वितीय इकाई (12 घण्टें)

चतुदर्श सर्ग - पञ्चदश सर्ग

प्रथम-द्वितीय याम साधना, प्रतीत्यसमुत्पाद्, प्रथम भिक्षा, बोधि उपदेश

तृतीय इकाई (12 घण्टें)

षोडस सर्ग - सप्तदश सर्ग

धर्मदीक्षा, राजा विम्बसार को धर्मोपदेश, वेणुवन प्रसंग

चतुर्थ इकाई (12 घण्टें)

विंशसर्ग एकविंश सर्ग

जेतवन वर्णन, राजा प्रसेनजित् को धर्मोपदेश, धर्मप्रचार

पंचम इकाई- (12 घण्टें)

पञ्चविंश, सप्तविंश

भोगनगर, पापापुर, कुशीनगर गमन, चुन्द को उपदेश, महाकश्यप द्वारा तथागत दर्शन।

परिणाम

- गौतमबुद्ध के चरित्र के अध्ययन से छात्र बुद्ध के धार्मिक सद्गुणों को आत्मसात करने को उन्मुख होता है।
- बुद्ध के ज्ञानमय एवं शांतिमय उपदेशों से वैयक्तिक, पारिवारिक व सामाजिक शांतिमय जीवन जीने को बल मिलता है।

निर्धारित पाठ्य पुस्तक-बुद्धचरितम्, स्वामी द्वारकादास शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी

देवप्रिया

BDPHMN-605 लघु शोध प्रबन्ध एवं वैदिक साहित्य - II

क्रेडिटः-04
घण्टें:-60

उद्देश्य-

1. लघु शोध प्रबन्ध द्वारा लेखन एवं चिन्तन प्रक्रिया का विकास एवं विश्लेषणात्म कौशल की अभिवृद्धि कराना।
2. छान्दोग्य के ओंकार या उद्गीथ उपासना, गायत्री महिमा, श्वेतकेतु-उद्दालक संवाद, नारज-सनत्कुमार संवाद से अवगत कराना।
3. श्वेताश्वतर के ईश्वर-जीव-प्रकृति तत्व, ध्यान-योग की विधि और महत्व, प्राणायाम का क्रम एवं महत्ता, ध्यान के लिए उपयुक्त स्थानों का निर्देश इत्यादि प्रकरणों का बोध कराना।
4. भ्वादिगण, अदादिगण, जुहोत्यादिगण, तनादिगण इत्यादि धातुओं का परिचय कराना।

प्रथम इकाई- Introduction to the Research Methodology, Objectives and Ethics.
One research paper in a journal and a seminar presentation are compulsory. (15 घण्टें)

द्वितीय इकाई- छान्दोग्योपनिषद् (उद्गीथ उपासना, गायत्री महिमा, उद्दात्मक-श्वेतकेतु संवाद, नारद-सनत्कुमार (संवाद), **श्वेताश्वंरोपनिषद्** (ईश्वर-जीव-प्रकृति, ध्यानयोग की विधि और महत्व, प्राणायाम का क्रम एवं महत्ता, ध्यान के लिये उपयुक्त स्थानों का निर्देश) (15 घण्टें)

तृतीय इकाई- आख्यातिक 1,भ्वादिर्गणः, भू-सत्तायाम्, एध्-वृद्धौ, स्पर्ध्-**सङ्घर्षे**, बाधृँ-विलोडने, वदि-अभिवादनस्तुत्योः, मुद-हर्षे, यती-प्रयत्ने, जर्भी-गात्रविनामे, गुपू-रक्षणे, क्रमुँ-पादविक्षेपे, (धिवि-प्रणीननार्थः), शिक्षँ-विद्योपादाने, भ्रन्शू -अधःपतने, कृपूँ-सामर्थ्ये, पा-पाने, गम्लृ-गतौ, डुपचष्-पाके, दंश-दशने, गुहू-संवरणे। (15 घण्टें)

चतुर्थ इकाई- आख्यातिक 2, अदादिर्गणः (अद-भक्षणे, हन-हिंसागत्योः, जागृ-निद्राक्षये, यू मिश्रणामिश्रणे च, अङःशासु इच्छायाम्,) जुहोत्यादिर्गणः (हु-दानादनयोः (आदान चेत्येके), डुदाञ्-दाने, जिभी भये, ओहाक् त्योग) दिवादिर्गणः (दिव-क्रीडाविजी, जृष वयोहानौ, शभु-उपशमे, रञ्ज-रागे), तुदादिर्गणः (तुदः व्ययजे, मृङ-प्राणत्यागे, मुच्लृ-मोचने, कृ-विक्षेपे) रुधादिर्गणः (रुधिर् आवरणे), तनादिर्गणः (तनु-विस्तारे, डुकृञ्-करणे), क्रयादिर्गणः (डुक्रीञ-द्व्यविनिमये, ज्ञा-अवबोधने), चुरादिर्गणः (चुरः-स्तेये) (15 घण्टें)

परिणाम- 1.लघु शोध प्रबन्ध द्वारा विद्यार्थियों में संदर्भ ग्रन्थों की जानकारी होगी, शोध प्रक्रिया को समझने में सहायता मिलेगी तथा विभिन्न मतों एवं सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन कौशल की अभिवृद्धि होगी।
2. उपरोक्त छान्दोग्य एवं श्वेताश्वतर के प्रसंगो का प्रामाणिक ज्ञान अर्जित करेगा।
3. धातुपाठ के कथित धातुओं से पूर्णतः परिचित होगा जाता है।

निर्धारित पाठ्य पुस्तक- एकादशोपनिषद, डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार जी, प्रकाशक - विजयकृष्ण लखनपाल-डब्ल्यू-77 ए, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-48

सहायक ग्रन्थ - उपनिषद् रहस्य - पण्डित भीमसेन शर्मा

Research Methodology & Project/Dissertation Dr.Sadhvi Devpriya (Cheif Editor) Dr.Sanwar Singh Yadav (Editor). Publisher – Divya Prakashan 2025.

Research Methodology: Ranjeet Kumar Publisher Pearson Education India 2005.

विषय विशेषज्ञ	**विषय विशेषज्ञा**	**विभागाध्यक्षा**
प्रो. श्रीनिवास वरखेडी	प्रो. शिवानी वी.	प्रो. साध्वी देवप्रिया
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,	डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक संस्कृत	दर्शन विभाग
नई दिल्ली	विश्वविद्यालय, बैंगलुरू	पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार